टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जून 2023 वर्ष 27, अंक 06 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2080 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

वेदों के स्वाध्याय में जीवन की सफलता

❑ मनमोहन कुमार आर्य

हम मनुष्य इस कारण से हैं कि हम अपने मन व बुद्धि से चिन्तन व मनन कर सत्यासत्य का निर्णय करने सहित सत्य का ग्रहण एवं असत्य का त्याग कर सकते वा करते हैं। यह कार्य पशु व पक्षी योनि के जीवात्मा नहीं कर सकते। इसका कारण यह है कि पशु व पक्षियों आदि के पास न तो मनुष्यों के समान बुद्धि है और न ही उनके पास मानव शरीर के जैसा शरीर है जिससे वह विचार व चिन्तन-मनन कर सत्य का निर्णय कर अपने कर्मो को कर सकें। अत: मनुष्य योनि में मनुष्य को अपनी बुद्धि की यथाशक्ति उन्नति कर उससे जो उचित कर्म व व्यवहार निश्चित होते हैं, उन्हें अवश्य ही करना चाहिये। प्राय: लोग ऐसा करते भी हैं परन्तु बहुत से लोग काम, क्रोध, लोभ, इच्छा, ईर्ष्या व द्वेष आदि के वशीभूत होकर अकरणीय कर्म व व्यवहार करते हैं। संसार के स्वामी सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी ईश्वर की दृष्टि से हम जीवों का कोई शुभ व अशुभ कर्म छिप नहीं पाता जिससे जीवात्मा वा मनुष्य को अपने सभी कर्मो का जन्म व जन्मान्तरों में भोग करना व उनका परिणाम भोगना पड़ता है। मनुष्य को जीवन में जो सुख व दु:ख मिलते हैं वह उसके वर्तमान जीवन सहित पूर्वजन्मों के अभुक्त कर्मो का फल होते हैं। पूर्वकृत कर्मो को तो सभी मनुष्यों वा जीवात्माओं को भोगना ही पड़ता है परन्तु हम अपने वर्तमान व भविष्य के कर्मो का सुधार अवश्य कर सकते हैं। इसके लिये हमें एक विद्वान पथ-प्रर्दशक गुरु व आचार्य की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में ऐसे गुरु उपलब्ध भी हो सकते हैं परन्तु इस उद्देश्य की पूर्ति हम घर बैठे वेद एवं वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कर पूरी कर सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ से ही ईश्वर का साक्षात्कार किये हुए तथा वेदों के मर्मज्ञ विद्वान ऋषियों ने उपनिषद, दर्शन तथा मनुस्मृति आदि ग्रन्थ लिखकर हमारें कर्तव्यों का हमें बोध कराया है। हमें वेदों सहित उपलब्ध समस्त वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन निरन्तर प्रतिदिन कुछ घण्टे अवश्य करना चाहिये। ऐसा करते हुए पाप कर्मो को करने में हमारी प्रवृत्ति नहीं होगी जिससे हमारे जीवन में दु:खों की मात्रा तो कम होगी ही, आत्मा के शुभ कर्मो के आचरण से सुखों में वृद्धि भी होगी। शास्त्रीय ज्ञान व शुभकर्मो को करने से हमारी आत्मा की उन्नति होगी जिससे हमारा मनुष्य जीवन सफल होगा। हमारा वर्तमान, भविष्य एवं परजन्म सभी सुरक्षित होंगे तथा हमें सुख व उन्नति प्राप्त कराने वाले होंगे। अत: जीवन को सफल व उन्नत करने के लिये हमें वेद व वैदिक साहित्य के अध्ययन सहित ईश्वर, आत्मा तथा सांसारिक विषयों पर विचार व चिन्तन करते रहना चाहिये। इससे हमारा जीवन असत्य व अनुचित कर्मो को करने से बच सकेगा तथा हम धर्म के पर्याय शुभकर्मो का संचय कर अपने भविष्य को सुखद एवं शान्ति से पूर्ण बना सकेंगे।

मनुष्य जीवन की उन्नति में वेदों के अध्ययन व ज्ञान का सर्वोपरि महत्व होता है। वेद कोई साधारण पुस्तक नहीं है। यह सृष्टि के आरम्भ में इस सृष्टि के रचयिता अनादि, अनन्त, अमर, नित्य, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अपना निज का ज्ञान है जो उसने मनुष्यों के कल्याण के लिये चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को सर्ग के आरम्भ में दिया था। इसी ज्ञान को हमारे परवर्ती ऋषियों व विद्वानों ने सुरक्षित रखा जो आज भी अपने शुद्ध व यथार्थस्वरूप सहित शुद्ध वेदार्थ सहित हमें उपलब्ध है। वेदों के शीर्ष आचार्य ऋषि दयानन्द ने वेदों की परीक्षा व परम्पराओं का अध्ययन कर पाया था कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक हैं तथा इसका अध्ययन, अध्यापन, प्रचार तथा आचरण मनुष्यों का परम धर्म है। यह बात वेदाध्ययन एवं विचार करने से सत्य सिद्ध होती है। सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में वेदों का सत्यस्वरूप प्रस्तुत किया गया है। इसे पढ़कर पाठक आश्वस्त हो सकता है कि वेदों का मनुष्य के जीवन में सर्वोपरि महत्व है और ऋषि दयानन्द की सभी मान्यतायें वेदानुकूल एवं परमधर्म के पालन में प्रेरक एवं सहायक हैं। वेदों का अध्ययन करने वाला मनुष्य धर्ममार्ग से च्युत नहीं होता। वह धर्म संचय कर जन्म व जन्मान्तरों में सुखों को प्राप्त करता है। अशुभ कर्म नहीं करता जिससे इनके परिणाम में होने वाले दु:खों व मुसीबतों से वह बचा रहता है। हमारा वर्तमान जन्म अपने

(शेष पृष्ठ 15 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

गिरने से मत डरिए

- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

यहाँ मैं आपसे एक ऐसी बात कहने जा रहा हूँ, जो हम सबसे जुड़ी हुई है और वह है-हारने की बात, पराजित होने की बात। यह बात है निराश होने की बात, किन्तु फिर भी उठकर खड़े हो जाने की बात। मैंने बहुत सोचा लेकिन सफल नहीं हो सका। आप सोचकर देखिए शायद आप सफल हो जाएँ। आपको सोचना यह है कि क्या आप किसी भी एक ऐसे आदमी का नाम बता सकते हैं, जो अपनी जिन्दगी में कभी भी असफल नहीं हुआ हो। इसे आप यूँ भी कह सकते हैं कि क्या आप पैदल चलने वाले एक भी ऐसे व्यक्ति का नाम बता सकते हैं, जो कभी गिरा न हो। मैं तो किसी भी ऐसे आदमी के बारे में सोच नहीं पाया हूँ और मुझे उम्मीद है कि आप भी नहीं सोच पाएंगे, क्योंकि ऐसा आदमी आपको मिलेगा ही नहीं। और यदि आपको मेरी इस बात पर विश्वास हो रहा है तो फिर आपको इस बात पर भी विश्वास हो जाना चाहिए कि आपके साथ भी यही होगा।

अक्सर होता यह है कि जब हम असफल हो जाते हैं, तो अन्दर से टूट जाते हैं। कुछ लोग तो इतने अधिक टूट जाते हैं कि उन्हें चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देने लगता है और वे सोच लेते हैं कि अब कुछ नहीं हो सकता, जबकि ऐसा होता नहीं है। एक बहुत अच्छी बौद्ध कहावत है कि **''चारों तरफ अंधेरा है तो कोई बात नहीं। बर्फ गिर रही है, तो कोई बात नहीं। सूरज फिर से निकलेगा, क्योंकि सूरज कभी मरता नहीं है।''**

यहाँ मैं आपके लिए एक ऐसी सच्ची कहानी प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे सुनने के बाद शायद आप इस पर विश्वास न करें, लेकिन आपको इस पर विश्वास करना ही चाहिए, क्योंकि यह बहुत अधिक नहीं, बल्कि लगभग पौने दो सौ साल पुरानी बात है।

यह उस आदमी की कहानी है जो 21 वर्ष की उम्र में व्यापार में असफल हुआ, 22 वर्ष की उम्र में चुनाव की दौड़ में हारा, 24 साल की उम्र में फिर से व्यापार में असफल हुआ, 26 साल की उम्र में उसकी प्रेमिका की मृत्यु हो गई, 27 साल की उम्र में उसे नर्वस ब्रेकडाउन हो गया। 34 साल की उम्र में वह संसद में चुनाव में हारा, 36 साल की उम्र में फिर हारा, 45 साल की उम्र में एक बार फिर सीनेटर बनने से वंचित रहा और 52 वर्ष की उम्र में वह अमेरिका का राष्ट्रपति चुन लिया गया। इस शख्स का नाम था अब्राहम लिंकन। कभी-कभी तो यही भी कहा जाता है कि असफलताएं जितनी बड़ी होंगी, सफलताएं भी उतनी ही बड़ी मिलेगी। **घुड़सवार ही घोड़े पर से गिरा करते हैं, घुटनों के बल चलने वाले नहीं।**

महत्वपूर्ण बात यह नहीं होती कि वह गिरा की नहीं। महत्वपूर्ण बात यह होती है कि वह गिरकर उठा कि नहीं। और यदि गिरकर उठा तो उठने में समय कितना लगाया, क्योंकि यही उस बात का निर्धारण कर देगा कि वह कितने समय बाद सफल होगा। जो जितनी जल्दी उठ जाएगा, वह उतनी जल्दी सफल भी हो जाएगा। यही इस प्रकृति का नियम है और इसी नियम को आत्मसात करके हमें अपनी जिन्दगी के इस सफर को जारी रखना है। इससे हमें निराशा नहीं होगी और हमारी यह यात्रा जारी रह सकेगी।

-पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ अनऔचपारिक बैठक में चर्चा के कुछ अंश

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके। **वर्तमान में अच्छी गाय 75000/- रूपये के लगभग प्राप्त हो रही है।**

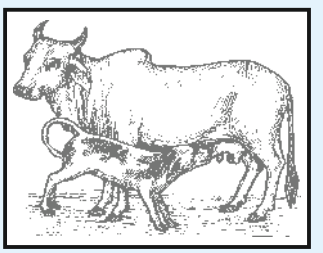

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 25,000/- रुपये गाय की खरीद हेतु सहयोग राशि भेज रहे है। 3 सहयोगी प्राप्त होते ही गाय खरीदी जाती है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गर्म वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदकः- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

आनन्द का स्त्रोत मौन

ब्रह्म मुहूर्त का समय, शांत वातावरण, प्रकृति का वह मौन कितनी मौलिकता लिए हुए प्रतीत होता है। एकाग्रचित होने पर एक चिंतन चलने लगता है। हाँ! यह मौन ही तो शाश्वत सत्य है। यह मौन तो जन्म से ही जुड़ा है, जीवन आरम्भ से ही इसका प्रारम्भ हो जाता है। जब बालक इस धरा पर जन्म लेता है तब सबसे पहले मात्र देखता है, बोलता नहीं। मौन जन्म से प्राप्त अवस्था है, मृत्यु के उपरान्त देह भी मौन हो जाती है और जन्म मरण के इस चक्र से मुक्ति प्राप्त कर चुके सिद्ध भी तो मौन ही हैं। अर्थात् मौन हमारी अपनी अवस्था है। पैदा हुए बच्चे का मौन निर्दोष मौन है। मात्र कुछ क्षण के लिए ही सही एक बार बच्चों की तरह मौन हो जाएँ और मौन होकर मात्र देखना प्रारम्भ करें, फिर अनुभव करें कि क्या होता है?

सामान्यतया हम यही जानते और समझते हैं कि मौन का तात्पर्य है न बोलना, परस्पर वार्ता का निषेध। परन्तु वस्तुस्थिति इससे भिन्न है। मौन धारण करने से बाह्य जगत् से चर्चा रूक जाती है, पर अन्तःकरण में आत्मा और परमात्मा की वार्ता चालू हो जाती है। कहा भी जाता है कि मौन प्रार्थनाएं परमात्मा तक शीघ्र पहुँचती हैं, क्योंकि वे शब्दों के भार से मुक्त होती हैं। मौन तो वह बिन्दु है जहाँ से संसार का नहीं, अपितु सच्चे आत्मस्वरूप का दर्शन होता है। मौन एक अहसास है, जिसे शब्दों में समाहित करना संभव नहीं।

वाक् शक्ति से मनः शक्ति विशेष प्रबल होती है। इसलिए मानसिक स्मरण में अधिक तीव्र शक्ति होती है। यदि भक्ति की बात करें तो भक्ति भी भाषा में नहीं, मन से श्रद्धा में जीवित होती है। इतना अवश्य है कि विचार शक्ति के साथ जो अनुपम शक्ति होती है वह है बोलने की शक्ति-भाषाशक्ति। लेकिन इस शक्ति का भी सदुपयोग करना हमारे ही हाथ की बात है, क्योंकि बोलना अगर चाँदी है तो मौन रहना सोना है।

मौन का वास्तविक अर्थ है-मन का मौन। मात्र वचन से मौन होने के कारण व्यक्ति लिख-लिखकर उत्तर देते रहते हैं। लिखकर उत्तर देने में सारी इन्द्रियाँ काम करती हैं, लिखने में तनाव भी रहता है, चिड़चिड़ापन एवं जल्दी भी रहती है। सामने वाला पूरी बात समझ भी नहीं पाता, फिर क्रोध आने लगता है कि यह समझता क्यों नहीं? हाथ, होंठ, आंखों और शरीर को तरह-तरह से नचाकर समझाते हैं। क्या यह मौन है? क्या इससे शांति की प्राप्ति होती है? ध्यान की साधना भलीभांति हो पाती है? जहां न तर्क, न विवाद न आक्षेप, न खंडन है वह सच्चा मौन है। आँखों से इशारा किए जा रहे हैं, दोनों हाथों को नचा रहे हैं, ऊँ-ऊँ, हूँ-हूँ किए जा रहे हैं, यह मौन नहीं है। मौन में शरीर भी शांत, इन्द्रियाँ भी शांत, बुद्धि भी शांत, प्राण भी शांत, आनन्द में बैठे हैं, मस्ती में मग्न हैं, चारों ओर शांति व तृप्ति फैल रही है। किसी दूसरे लोक की यात्रा हो रही है। मौन में मात्र बाहर से अलग होना ही नहीं, अंदर से जुड़ना भी आवश्यक है।

मौन शब्द के दो अर्थ प्रतिभासित हुए-एक तो पूर्ण मौन, एक अल्प भाषण। व्यर्थ मत बोलो, निरर्थक मत बोलो। बोलने में तीन बातों का उपयोग हो- 1. सोचकर बोलो, 2. समझकर बोलो, 3. विचारपूर्वक बोलो। चुपचाप हो जाना ही मौन नहीं है, उपयुक्त अवसर पर मौन होना और बोलना दोनों में समयज्ञता चाहिए। ''समय पर सहना, मौके पर कहना'' आना चाहिए। मानव की भाषा शक्ति है। उसका उपयोग उसे विवेकपूर्वक करना चाहिए। अधिक, अनर्गल, अपशब्द, अनर्थकारी नहीं बोलना चाहिए। वर्तमान युग में गोली से जितने युद्ध नहीं होते बोली से उतने होते हैं। वर्षों पहले हुए युद्धों के मूल में भी बोली ही रही है। इसलिए कम बोलें, काम का बोलें। कहते हैं- ''ज्ञानी ज्यादा नहीं बोलता, अज्ञानी कम नहीं बोलता।'' मौन, वचन-गुप्ति, भाषा-समिति आदि एक ही हैं। एक विचारक ने कहा-''जहाँ शब्दरूपी पत्ते अधिक होते हैं वहाँ ज्ञान रूपी फल दिखाई नहीं देता है।''

मौन एक भाषा भी है, जैसे आंसू भी एक भाषा है। वह पीड़ा व्यक्त करती है तो प्रेम के उत्कृष्ट आरोहण में भी वही होती है। ''मुँह का मौन होना मौन नहीं, सच्चा मौन तो मन का मौन होना है।'' ''तन का संयम रोग से और वाणी का संयम कलह से बचाता है।'' ''जिनका जीवन बोलता है उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।''

आत्मा को परमात्मा के निकट लेकर आने वाला चुम्बक है मौन, बाह्य जगत् के संबंध हटाकर, अन्तर्जगत के कण-कण में आध्यात्मिकता की ऊर्जा पैदा करने वाला है मौन। मौन पर चर्चा करना बेकार है, मौन पर लिखना व्यर्थ है, मौन तो अहसास करने वाला भाव है।

अजय टंकारावाला

एक प्रेरणा परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 110 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज की आवश्यकता है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी। **एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 20,000/- रुपये है।** आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदकः- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के
एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

❐❐❐

गौ-दान : महा-दान–उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

❐❐❐

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं
पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

❐❐❐

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

❐❐❐

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए
सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

❐❐❐

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

❐❐❐

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

–:निवेदक:–

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

यत्र तत्र सर्वत्र हो वेद प्रचार

❒ डॉ. बिजेन्द पाल सिंह

दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती ने अपने शिष्य दयानन्द को दक्षिण स्वरूप वेद प्रचार के लिए आदेश दिया और समाज में बढ़ रहे अन्ध विश्वास व पाखण्ड को दूर करने के लिए आज्ञा दी। गुरु की आज्ञा का महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पूरी तरह से पालन किया, उन्होंने सामान्य व्यक्ति से लेकर राजा महाराजाओं तक तथा भारत में चारों ओर वेद की दुन्दुभि बजा दी। शास्त्रार्थ किए, प्रवचन किए पत्रक लिख-लिख बांटे सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, आर्याभिनव, स्व मन्तव्यामन्तन्य प्रकाश आदि अनेक पुस्तकें लिखी वेदों का भाष्य किया। आर्य समाजों की स्थापना की। आर्य समाजों की स्थापना का उद्देश्य वेदों का प्रचार करना था। समाज में बढ़ते पाखण्ड व अन्ध विश्वासों तथा कुरीतियों को दूर करना था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों को प्रचार प्रसार कर समाज को जागृत करना था। आज वही आर्य समाज महर्षि के विचारों का प्रकाश कर रहे है। इन आर्य समाजों से वेद का प्रचार होता रहे यह प्रत्येक आर्य की भावना है। आर्य समाज का कार्य है कि आर्य संगठित रहें तथा ओ३म् के ध्वज के नीचे आए घर-घर अग्निहोत्र हों। घर-घर में सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका जैसे साहित्य हो और परिवारों व समाज में विस्तृत रूप से चर्चा व शास्त्रार्थ हुआ करें। नगर-नगर, ग्राम, गली-गली में वेद की दुन्दुभि बजा करें। शिक्षा व्यवस्था वैदिक हो और कान्वैण्ट इंग्लिश, जो मैकाले की पद्धति थी, समाप्त हो। राजनीति व राजकीय सेवान्तर्गत केवल और केवल वेदाचारी सत्याचारी गुरुकुल, आश्रम के विद्यार्थी ही सेवा प्रदान करें। घर-घर ऐसा वेद का दीप प्रज्जवलित हो। यह कार्य होने चाहिए थे। आर्य समाजों से परन्तु दु:ख का विषय है कि वर्ष में कुछ दो चार या कहीं कुछ ही अधिक कार्यक्रम हो पाते है। वह भी आर्य समाजों की चहर दीवार के अन्दर ही होते हैं वहां भी सुनाने वाले भजनोपदेशक व उपदेशक आर्य समाजी विद्वान होते हैं और सुनने वाले श्रोतागण भी आर्य ही होते हैं पौराणिक भाई नहीं होते न बाहर के लोग आते हैं न हम उन्हें बुलाते हैं तो ऐसे में वेद प्रचार कैसे सम्भव होगा। आर्य समाज की विचारधारा से कोई भी व्यक्ति वंचित नहीं रहना चाहिए वेद का प्रकाश सर्वत्र हो। आर्य समाज से निकल कर आर्यजनों को घर-घर जाना चाहिए। आज के बालकी बालिकाओं माता बहनों को वेद का संदेश देना चाहिए, आज भारत की अधिकांश जन संख्या वेद को नहीं जानती हिन्दू भाई ही बहुत कम जानते हैं जो आर्य समाजों में नहीं आ सकते। उनके पास जाएं और वेद का प्रचार तथा पाखण्डों के बारे में उन्हें समझाएं।

आर्य समाजों के चारों ओर जो कॉलोनी व ग्राम हैं वहां भी जनता वेद से अनभिज्ञ मिल जाएगी। अधिकांशत: लोग आर्य समाज के पावन ज्ञान से वंचित हैं उन्हें भी समझाना चाहिए। हम आर्य समाज के पास के ग्राम तथा कॉलोनियों को देखें कि उन परिवारों में प्रचार करना है उसकी रूप रेखा बना लें, कॉलोनियों में जाकर छोटे-छोटे यज्ञ करें पारिवारिक सदस्यों को जोड़ें वहां बालक व युवाओं को आमंत्रित करें तब उन्हें जाग्रत करें। जैसा कि आर्य समाज का नियम है वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना सुनना सुनाना सब आर्यो का कर्त्तव्य हैं। अर्थात् इस वेद प्रचार कार्य में समस्त आर्य सामाजियों को सहयोग देना चाहिए और हम नियम बना लें कि प्रत्येक कॉलोनी प्रत्येक ग्राम में जाकर प्रचार करना है तब बहुत कार्य हो जाएगा। बस आर्य सामाजियों को संगठित और क्रियाशील रहने की आवश्यकता है। हम आर्य समाजों में भी अच्छा कार्य कर सकते है दिखावे वाली भावना से दूर रहकर कार्य करें और पुराने आर्य सामाजियों को भी याद कर लिया करें वह आर्यजन जो हमारे समाजों में आते रहे थे सक्रिय भी रहे थे। उन्होंने वेद प्रचार भी स्थान स्थान पर कराया था। पुराने आर्य सामाजियों की बहुत सी बातें प्रेरणादायक होती है। आज के समय में आर्य समाजों का भवनों का सदुपयोग पूरी तरह से नहीं हो रहा है हालांकि आर्य समाजों में पर्याप्त सुविधाएं हैं पुरोहित सेवक अध्यक्ष मन्त्री पूरी कार्यकारिणी होती है बड़े-बड़े भवन हैं। ऐसे स्थानों व बाजारों नगरों के मध्य स्थित है जहां इन्चों में इनका मूल्य आका जाता है परन्तु भवन खाली पड़े रहते हैं जहां घनी आबादी है। कार्यक्रम लगातार चलते रहने चाहिए क्योंकि आर्यसमाज का कार्य बहुत विस्तृत है। आर्य समाजों में वातानुकूलित व्यवस्था है, सुन्दर भी है वातानुकूलित इसलिए नहीं है कि हम बाहर ही न निकलें कही नगर गली ग्राम आदि में भी नहीं जाए हमें बाहर जाने की अपनी सुविधानुसार आदत डालनी चाहिए और प्रचार करना चाहिए तभी तो ऋषि का कार्य हो सकेगा यदि आर्य समाज भवन लगातार खाली पड़े रहते हैं तो यह उन भवनों का दुरुपयोग ही है। आर्य समाज के विद्यालयों में विद्यार्थियों के मध्य जाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तवयों पर प्रकाश करना चाहिए वहां वेद मन्त्र की ऋचाएं गुंजायमान् होनी चाहिए यहीं नहीं बड़े अधिकारियों को आर्य संस्था के प्रचार कार्यक्रमों में सादर आमंत्रित करना चाहिए। अधिकारियों से अनुमति ले निजी व्यक्तिगत तथा सरकारी विद्यालयों में भी प्रचार करना चाहिए। इस प्रकार आर्य समाज अपना कार्य विस्तृत रूप में कार्यक्रमों की रूप रेखा बना कर वेद प्रचार व जनता में जागरुकता उत्पन्न कर सकता है। आइए वेद प्रचार को महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती पर नया रूप देकर कार्य को तीव्र गति प्रदान करें।

- चन्द्र लोक कॉलोनी, खुर्जा, मो. 8650119935, 8979994715

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के भव्य प्रांगण में नव दिवसीय 71वें वार्षिकोत्सव का समापन समारोह 30 अप्रैल 2023 को सोत्साह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सामवेदीय वृहद् यज्ञ के साथ-साथ भजन एवं वेद प्रवचन जनाकर्षण के मुख्य केन्द्र रहे। विभिन्न दिवसों पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है जिसमें आर्य महिला सम्मेलन, बाल सम्मेलन छात्रवृत्ति वितरण समारोह आदि प्रमुख हैं। आर्य महासम्मेलन में विभिन्न उच्चकोटि के विद्वानों ने राष्ट्र निर्माण में महर्षि दयानन्नद जी की भूमिका इस विषय पर अपने महत्त्वपूर्ण विचार रखे। इन सभी कार्यक्रमों में आर्यजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर वैदिक धर्म की रक्षा और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का दृढ़ संकल्प लिया। इस अवसर पर वैदिक धर्म तथा आर्य समाज की आजीवन सेवा के लिए कुछ वरिष्ठ आर्य जनों का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। सभी सम्मानित जनों को समाज के प्रधान श्री अशोक सहगल जी एवं मन्त्री श्री विकास मैहता जी ने शॉल के साथ अभिनन्दन पत्र भेंट किये। इस अवसर पर नरेन्द्र वलेचा जी द्वारा लिखित पुस्तक ''सुविचार संग्रह'' का लोकार्पण भी हुआ।

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान, मो. 9672223865, 9416078595

साबी नदी के किनारे स्वस्थ जलवायु युक्त **आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया** में छठी कक्षा से प्रवेश प्रारम्भ है तथा प्रथमा से आचार्य तक गुरुकुल पद्धति से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से संबंधित पाठ्यक्रम नि:शुल्क पढ़ाया जाता है। गुरुकुल में योग्य प्राचार्य तथा अनुभवी प्राध्यापिकायें अध्यापन कार्य में रत है। सुन्दर छात्रावास, गौशाला, यज्ञशाला पुस्तकालय, व्यायामशाला के प्रबन्ध के साथ आर्ष पद्धति पर आधारित इस गुरुकुल में आचार-व्यवहार, स्वास्थ्य, चरित्र निर्माण, देशभक्ति तथा धार्मिक शिक्षा योगाभ्यास आदि द्वारा कन्याओं का स्वर्णिम विकास करवाया जाता है, प्रवेश प्रारम्भ है।

सम्पर्क करें-प्राचार्य, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401

ऋषि दयानन्द जी की पवित्र जन्मभूमि टंकारा में
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा द्वारा संचालित
श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
एवम् महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल (आर्य पद्धति कक्षा 7 से 10वीं तक)

प्रवेश प्रारंभ

कक्षा-6 (प्रथमा प्रथम खण्ड)
कक्षा-7 (प्रथमा द्वितीय खण्ड)
कक्षा-8 (प्रथमा तृतीय खण्ड)
कक्षा-9 (पूर्व मध्यमा प्रथम वर्ष)
कक्षा-11 (उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष)
कक्षा-उपदेशक (10वीं कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद)

प्रवेश हेतु आवेदन करें: 15 जून 2023 से 10 जुलाई 2023

गुरुकुल में क्यों पढ़े?- ❑ ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए, ❑ सन्तानों को सुशिक्षित करने के लिए, ❑ अन्धविश्वास और पाखण्डों को चुनौति देने के लिए, वैदिक धर्म की पुन: स्थापना के लिए, ❑ गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिए, ❑ आश्रम व्यवस्था को जानने के लिए, राजधर्म को जानने के लिए, ईश्वर, जीव और प्रकृति के भेद को समझने के लिए, जगत् की उत्पति, स्थिति और प्रलय को समझने के लिए, ❑ बन्ध न और मोक्ष विषय को जानने के लिए, ❑ धर्म के सत्य स्वरूप को जानने के लिए, ❑भारत वर्ष में फैले मत-मतान्तरों में सत्य असत्य का निर्णय करने के लिए, ❑भारतीय संस्कृति को समझने के लिए, ❑ युवकों में बढ़ती हुई नास्तिकता को रोकने के लिए, ❑ धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के लिए, ❑ विश्व में मानव धर्म को विस्तृत करने के लिए, ❑ वैचारिक क्रान्ति के लिए।

सुविधाएँ- ❑ आवास व्यवस्था, ❑ उच्च गुणवतायुक्त भोजन (पौष्टिक), ❑ नि:शुल्क शिक्षा, ❑ गुणवतायुक्त शिक्षा, ❑ स्वच्छ वातावरण, ❑ खेल-कूद का मैदान, ❑ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार, ❑ प्रत्येक बच्चे का मानसिक, शारिरीक नैतिक व भावात्मक विकास।

आचार्य रामदेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
डाक टंकारा, जिला मोरबी (सौराष्ट्र गुजरात) 363650, मो. 09913251448

बाल व्यक्तित्व-निर्माण में शिक्षकों की भूमिका

❒ आचार्य भगवानदेव वेदालंकार

1. शिक्षक और शिक्षा का सम्बन्ध- किसी भी शिक्षा प्रणाली का एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटक 'शिक्षक' है। हर युग में शिक्षा का महत्व रहा है। जब तक धरती पर मनुष्य का जीवन रहेगा, तब तक शिक्षा का महत्व भी बना रहेगा। शिक्षा को 'प्रकाश' भी कहा जाता है, शिक्षा को ही मनुष्य का तीसरा 'नेत्र' खोलने वाला सूत्र भी माना गया है। जो 'शिक्षक' के बिना नहीं प्राप्त होता। शिक्षा देने वाले व्यक्ति को 'शिक्षक' कहा जाता है। शिक्षक का गहरा ज्ञान व उसका ऊँचा चरित्र ही शिक्षार्थी को प्रेरित करता है। बाल व्यक्तित्व के निर्माण में भी शिक्षक की विशेष भूमिका है।

2. वैदिक-संस्कृति में बच्चों के तीन उत्तम शिक्षक- वैदिक संस्कृति में बाल व्यक्तित्व के निर्माण में तीन उत्तम शिक्षक माने गये हैं-

''मातृमान पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद''

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। ''जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी बालक ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य वह संतान बड़ा भाग्यवान् जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जन्म से पांचवे वर्ष तक माता बालकों को शिक्षा करे, आठवें वर्ष तक पिता शिक्षा करे और नौवें वर्ष के आरम्भ में अपने सन्तानों को आचार्य कुल में अर्थात् जहां पूर्ण विद्वान और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों, वहाँ लड़के और लड़कियों को भेज दें''

3. 'माता' बच्चों के लिए कैसी कामना करे- आधुनिक युग के महान् शिक्षाशास्त्री आचार्य दयानन्द जी ने, भारतीय विचारधारा में विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली विद्या को ही शिक्षा नहीं माना वरन् शिक्षा का आरम्भ माता, पिता को आचार्य अथवा गुरु मानकर उनके द्वारा सिखाई बातों से भी माना है। ऋग्वेद के अनुसार माता अपने बच्चों के लिए कामना करती है कि **''मम पुत्राः शत्रुहणो अथो मे दुहिता विराट्''** अर्थात् मेरे पुत्र शत्रु नाशक हों, बाहिरी आक्रमणकारी शत्रुओं के भी नाशक हों और काम क्रोध आदि एवं अनाचार, भ्रष्टाचार और बुरी भावना रूप भीतरी शत्रुओं के भी विनाशक हों तथा मेरी कन्या 'विराट' विशेष रूप से शोभित हो अर्थात् अविद्या, अज्ञान अन्धकार और कुप्रथा आदि भ्रान्ति को मिटाने वाली हो।

4. 'शिक्षक' अनेक रूपों में- हमारे देश में ही नहीं, बल्कि सभी देशों में 'शिक्षक' के अनेक रूप हैं। 'शिक्षक' को ही 'गुरु' भी माना गया है। कहीं उसको 'आचार्य' का पद दिया गया है। 'शिक्षक' को आज के विद्यालयों में 'अध्यापक' नाम से भी जाना जाता है, जो बालकों को, अपने विषय को अधिकार पूर्वक पढ़ाता है। गुरु आज 'शिक्षक' बनकर अपने विद्यार्थियों को नाना प्रकार की शिक्षा देकर उनके व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

5. बालकों को 'शिक्षक' की प्रेरणायें- जीवन की यात्रा में, बालकों के व्यक्तित्व निर्माण में, शिक्षकों की विशेष आवश्यकता है। 'शिक्षक' बालक के सर्वांगीण विकास के लिए सबसे पहले तो शरीर को स्वस्थ रखने की शिक्षा करते हैं। बालकों को नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए, जिससे बालक शारीरिक दृष्टि से बलवान् बनें क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है।

'शिक्षकों का बालकों के व्यक्तित्व निर्माण में दूसरा काम है-उन्हें 'विद्याध्ययन' के लिए प्रेरित करना। बिना विद्या के मानव-प्राणी का जीवन निरर्थक है। विद्या से ही जीवन में प्रकाश आता है जिस किसी से भी हो, ज्ञान-लाभ करना चाहिए। विद्या प्राप्ति का समय युवावस्था ही है।

शिक्षकों का तीसरा काम है-बालकों को अपनी शिक्षा द्वारा ''समाज-सेवा के योग्य बनाना''। ऋषि-मुनि वनों के एकान्त में तपस्या करते हुए समाज से दूर रह सकते हैं, परन्तु साधारण व्यक्ति को तो समाज में रहना है, औरों के सुख-दु:ख में भाग लेना, चिकित्सा करना, धनोपार्जन करना, माता-पिता और गुरु जनों की सेवा करना, इस सबकी 'योग्यता' बालक को शिक्षक के द्वारा दी जानी चाहिए।

6. एक अच्छे शिक्षक में क्या-क्या गुण हों?- शिक्षक अपने उत्तम आचरण से बालक को उचित दिशा देता है। वह हमारे लिए श्रद्धा तथा सम्मान का पात्र होता है। एक प्रसिद्ध कहावत है-

''पानी पीजे छानकर, गुरु कीजे जानकर''

वेदों के प्रसिद्ध विद्वान डॉक्टर प्रशान्त वेदालंकार जी का मानना है कि ''जहां गुणी स्त्री पुरुष पढ़ाने वाले होते हैं वहाँ विद्या, धर्म और सदाचार की वृद्धि होकर प्रतिदिन आनन्द ही बढ़ता रहता है।''

7. शिक्षक में विशेषतायें- शिक्षक, आचार्य, गुरु, पण्डित, उपाध्याय आदि सभी शब्द हमारी संस्कृति में अध्यापक के लिए प्रयुक्त हैं जिसमें निम्न गुण होने चाहिये-शिक्षा देने वाला गुरु अपने विषय का पूर्ण विद्वान हो। साथ ही उसमें सुशीलता, मानवीयता, चरित्रता, निरभिमानी, सत्यवादी, धर्मात्मा, ईश्वर-विश्वासी, आस्तिक, परिश्रमशीलता, परोपकारी, वीर, धीर, गम्भीर, पवित्राचरण, शान्तियुक्त, दमन-शील, जितेन्द्रिय, प्रसन्नवदन जैसे गुण होंवे।

8. शिक्षकों का बालकों के प्रति कर्त्तव्य- ''बालक जब कभी कोई बुरी चेष्टा, बैठने-उठने में विपरीत आचरण, निन्दा, ईर्ष्या, द्रोह, विवाद, लड़ाई, बखेड़ा, चुगली, किसी पर मिथ्या दोष लगाना, चोरी-जारी, अनाभ्यास, आलस्य, अतिनिद्रा, अति भोजन, अति जागरण, व्यर्थ खेलना, इधर-उधर व्यर्थ गप-शप करना, विषय-सेवन, बुरे-व्यवहारों का कथा करना वा सुनना, दुष्टों के संग बैठना आदि दुर्व्यवहार करें तो उनको तुरन्त रोक देवें''। एक अच्छे शिक्षक का यह परम कर्तव्य है।

9. अच्छे बालकों का अपने शिक्षक के प्रति कैसा व्यवहार हो?- शिक्षक के साथ एक अच्छे बालक अथवा विद्यार्थी का व्यवहार अपने अध्यापक अथवा गुरु के साथ कैसा होना चाहिये? ''शिक्षार्थी बालक मिथ्या को छोड़कर सत्य बोलें, सरल रहें, अभिमान न करें, आज्ञा-पालन करें, अच्छे गुणों की प्रशंसा करें, निन्दा न करें। नीचे आसन पर बैठें, ऊँचे पर न बैठें। शान्त रहें, चञ्चलता न करें।

गुरु की ताड़ना पर प्रसन्न रहें, क्रोध न करें। जब वे शिक्षा करें, चित्त देकर सुनें, हाथ जोड़कर नम्र होकर उत्तर देवें, घमण्ड से न बोलें। शरीर और वस्त्र शुद्ध रखें। मैले कभी न रखें। जो कुछ प्रतिज्ञा करें, उसको पूरी करें। अच्छे व्यक्तियों का सदा मान करें, उनका अपमान कभी न करें। उपकार मान के कृतज्ञ होवें। किसी के अनुपकारी होकर,

(शेष पृष्ठ 12 पर)

सब कुछ परमात्मा के प्रकाश से चमक रहा है

❒ ओमप्रकाश आर्य

इस सृष्टि में दो प्रकार के पिण्ड हैं-स्वत: प्रकाशमान और परत: प्रकाशमान। आकार के आधार पर उनके भेद हैं- स्थूल और सूक्ष्म। लघु और विशाल। दो प्रकार के लोग हैं-जड़ और चेतन। नक्षत्र स्वयं प्रकाशमान पिंड हैं। जैसे-सूर्य। चन्द्रमा एवं अन्य ग्रह परत: प्रकाशमान हैं, उनमें स्वयं का प्रकाश नहीं है, वे सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हैं। उसी प्रकार जो वस्तु दिखाई देती है वह स्थूल है और जो दिखाई नहीं देती-छोटा होने के कारण वह सूक्ष्म है। कुछ पिण्ड बहुत बड़े-बड़े हैं और कुछ छोटे-छोटे। जैसे-सूर्य सौरमंडल में सबसे बड़ा है, उससे भी बड़े-बड़े नक्षत्र हैं। चन्द्रमा छोटा है। पृथिवी भी छोटी है। कुछ चलने-फिरने वाले जीवधारी हैं। जैसे-मनुष्य, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु आदि। कुछ अचर हैं। जैसे-वृक्ष, वनस्पतियां। इसके अलावा जड़ पदार्थ हैं-नदी, पहाड़, वायु, जल, अग्नि आदि। इन सबमें परमात्मा का प्रकाश व्याप्त है। सब उसी के प्रकाश से चमक रहे हैं। अथर्ववेद कहता है-

रोचसे दिवि रोचसे अन्तरिक्षे, पतङ्ग पृथिव्यां रोचसे रोचसे अप्स्वन्त:। उभा समुद्रौ रूच्या व्यपिथ देवो देवासि महिष: स्वर्जित॥

- अथर्व. 13.02.30, अर्थ-"(पतङ्ग) हे ऐश्वर्यवान् (जगदीश्वर!) तू (दिवि) प्रकाशमान (सूर्य आदि) लोक में (रोच से) चमकता है। तू (अन्तरिक्षे) मध्य लोक में (रोचसे) चमकता है। तू (पृथिव्याम्) पृथिवी (अप्रकाशमान) लोक में (रोचसे) चमकता है। वह (अप्सु अन्त:) प्रजाओं (प्राणियों) के भीतर (रोचसे) चमकता है। (उभा) दोनों (समुद्रौ) समुद्रों (जड़-चेतन समूहों) में (रूच्या) अपनी रूचि (प्रीति) से (वि आपिथ) तू व्यापा है। (देव) हे प्रकाशस्वरूप (देव:) तू व्यवहार जाननेवाला (महिष:) महान् और (स्वर्जित) सुख का जितानेवाला (असि) है।" परमात्मा से कोई स्थान खाली नहीं है। वह सर्वत्र सबमें व्याप्त है। इसीलिए उसका कण-कण में निवास बताया गया है। इस दृश्य-अदृश्य ब्रह्माण्ड में जितने लोक-लोकान्तर हैं उनमें उसी का प्रकाश है। सूर्य के प्रकाश से सौरमंडल प्रकाशित है किन्तु वह प्रकाश सूर्य में कहाँ से आया? अन्य जितने पिण्ड हैं जो स्वत: प्रकाशित हैं उनमें वह प्रकाश कहाँ से आया? वे किसके प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं? निश्चय ही इसका संकेत परमात्मा की ओर जाएगा। असंख्य ब्रह्माण्ड हैं। आकाश अनन्त है। सबमें व्याप्त होने से परमात्मा भी अनन्त है। इसी बात को सामवेद कहता है- **"मृगो न भीम: कुचरो गिरिष्ठा: परावत आ जगन्था परस्या:।'** अर्थात् वह परमात्मा दूर दिशा और दूर देश में जाने पर भी प्राप्त होता है। कहने का आशय यह है कि आप किसी भी दिशा में चले जाओ, कितनी भी दूर चले जाओ, दूर देश, दूर दिशा में भी, वह वहाँ पहुँचा हुआ है। इस जगती में जितने भी जड़-चेतन प्राणी हैं उन सबमें वह व्याप्त हो रहा है। इसी व्याप्ति के कारण उसको सर्वव्यापक कहा गया है। प्रकाशस्वरूप होने के कारण व सबको प्रकाशित करने के कारण उसे देव की भी संज्ञा प्राप्त है। वह सब प्राणियों के हृदय में विद्यमान होने के कारण सबके व्यवहार को जानता है। मनुष्य जो कुछ सोचता है, करता है परमात्मा सबसे पहले उसको जान लेता है। अनुचित कार्य रोकने के लिए आत्मा को प्रेरित करता है। किन्तु लोग उसकी सूक्ष्म प्रेरणा की ओर ध्यान नहीं देते, उसकी मूक आवाज को नहीं सुनते और अनुचित कार्य कर डालते हैं। जो उसकी मूक आवाज को सुनता है, उसकी प्रेरणा को पहचानता है, ध्यान देता है, वह सदैव नेक कर्म करता है और उसके बताए मार्ग पर चलकर सर्वसुखों को प्राप्त करता है। यदि लोग वेद के इस मन्त्र पर ध्यान दें और विचार करें तो ईश्वर के नाम पर मची भागदौड़ और सारी भ्रांतियाँ मिट जाएँ। जब वह सबके अन्दर विद्यमान है तो उसको अपने अन्दर क्यों नहीं देखते? क्यों बाहर की दुनिया में व्यर्थ के चक्कर लगाते हैं। धन नष्ट करते हैं और व्यर्थ के लड़ाई-झगड़े मोल लेते हैं। जो चीज अन्दर मिलनी है उसे बाहर खोजते हैं। यह अज्ञानता नहीं तो और क्या है? हम वेद की मानेंगे नहीं और निरर्थक उसके नाम पर अपने को ठगाते फिरेंगे। जरा आसमान की ओर मुंह करके तो देख लो। रात में तारों की दुनिया तो निहार लो। समुद्र की धारा को तो देख लो। पहाड़ों के पास खड़े हो जाओ। एक फूल की सुन्दरता तो देख लो। चित्र-विचित्र पक्षियों पर नजर तो दौड़ा लो। सूर्यास्त व सूर्योदय को तो देख लो। निश्चय ही उस परमात्मा का बोध होगा। उसके होने का प्रमाण मिल जाएगा। ये पदार्थ मूक भाषा में आपको बहुत कुछ परमात्मा के बारे में जानकारी दे देंगे। सबमें व्याप्त परमात्मा हँस रहा है। मूक भाषा में बोल रहा है। अपने मौजूद होने की कहानी कह रहा है पर हम उसको नहीं देखते। हम तो देखते हैं कौन सा मंदिर अच्छा है? कौन सी मूर्ति सुन्दर है? कहाँ पर अधिक संख्या में लोग जा रहे हैं? कहाँ पर जाने पर चमत्कार हो जाएगा? कौन-सी मूर्ति चमत्कार दिखा रही है? कहाँ पर कोई अजीबो-गरीब वस्तु दिखलाई पड़ेगी? बस परमात्मा के नाम पर यही सब हो रहा है। अन्ततोगत्वा मिलता कुछ नहीं है। अत: वेद की सुनो! वेद की मानो। वेद को पढ़ो। वेद को जानो। वेदानुसार चलो। तभी कल्याण होगा अन्यथा नहीं।

- आर्य समाज रावतभाटा, बाया कोटा (राजस्थान)

देने में है प्रसन्नता

एक बार एक विद्वान उपदेशक एक सभा में प्रवचन कर रहे थे। सभा में 100 के लगभग श्रोता उपस्थित थे। उस समय वे प्रसन्नता पर बोल रहे थे, तभी अचानक उपदेशक चुप हो गये और सभी को एक-एक गुब्बारा देते हुए बोले, "आप सभी गुब्बारे पर अपना नाम लिख दें।" जब सभी ने अपने नाम लिख दिए तो उपदेशक ने सभी गुब्बारे इकट्ठे किए और पास के एक कक्ष में छोड़ आए। इसके बाद उन्होंने सभी श्रोताओं से पांच मिनट में अपना नाम लिखा गुब्बारा उठाकर लाने को कहा। देखते ही देखते उस कक्ष में छीना-झपटी, अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सभी के चेहरों पर कठोरता दिखाई दे रही थी। पांच मिनट बीत गए लेकिन कोई भी अपना गुब्बारा नहीं ढूंढ पाया। अब उपदेशक ने धैर्य और शांति पूर्वक जिस व्यक्ति, जिसके नाम का गुब्बारा मिले उसे देने को कहा। एक मिनट के अंदर हर व्यक्ति के हाथ में उसका गुब्बारा था। विद्वान उपदेशक ने कहा, "बिलकुल, ऐसा ही हमारे जीवन में होता है। हर कोई प्रसन्नता की तलाश में इधर से उधर बैचेनी से घूम रहा है जबकि यह नहीं जानता कि प्रसन्नता मिलेगी कहां? प्रसन्नता दूसरों से छीना-झपटी करने से नहीं, दूसरों को देने में छिपी रहती है। दूसरे को प्रसन्नता देकर तो देखिए, आपको खुद को प्रसन्नता मिल जाएगी। ढूंढने की आवश्यकता ही नहीं होगी। यही तो हमारे जीवन का उद्देश्य है। "वहां आए श्रोताओं के चेहरों पर प्रसन्नता झलक रही थी।

- अर्जुनदेव चड्ढा, 4-प-28, विज्ञाननगर, कोटा-324005, मो. 094141-87428

Swami Dayanad: A Social Reformer with a Scientific Approach

❑ Arun Kumar Gupta

Change is an inevitable rule of society. Changes have been taking place in the society since the beginning. Indian society has also not remained untouched by this rule of change. But due to the political dependence and interference, some insensitivity came towards these changes. As a result, Indians suffered weakness, poverty, inferiority complex and other disorders, Political, economic and religious oppression and lack of self-realization gave rise to many such frustrations in the Indian society, which were not easily eradicated. Whether it was Muslim or British, the sense of defeat generated by foreign influence has caused irreparable damage to the religious, spiritual and moral values of the vast Hindu society of India.

This situation was used inappropriately by some influential people of the society and to fulfill their selfish interests they propagated rituals in the name of religion, false superstitions in the name of morality, division of labour and special classes in the name of work. As a result, narrow-mindedness, permissiveness and rigidity started spreading everywhere in the society, which led to child-marriage, kidnapping of women, independence, feeling of inferiority, division into untouchables, practice of polygamy, atrocities on Dalits and lower classes. Association of non-vegetarian, alcholism and experimentation with religion and culture etc. gave birth to social evils.

These social evils or misdemeanors started affecting the Indian society like a mite and made the once strong, healthy and progressive Indian society so dilapidated and hollow that it became unable to face foreign threats and foreign atrocities.

Using Scientific techniques and methodology, Swami Dayanand tried to read and improve this state of Indian society as a religious speaker and lecturer as well as a socilogist. Social reform is a major agency of social change through which the ignorance of a society can be eradicated in order to end the evil practices prevalent in the society for which Maharishi Dayanand Saraswatiji did a yeoman job for the upliftment of society.

The negative changes taking place in the Indian society deeply influenced Maharshi Dayanand. Along with the religious perpective of the Indian society, he made a scientific inverstigation of its social conditions and the pains and problems of a common man. That`s why the social reforms done by Swami ji, whether it is about women`s upliftment or denial of evils and bad practices prevalent in Hindu society were scientifically studied.

One of the important things in Swami Ji`s social reform was that he used to ask people to use their intelligence, discretion and thinking system to bring change in the society and also tried to give them a proper environment of that. This is proof of his progressive thoughts and scientific outlook.

Here i would like to quote an article published in Biradare Hind in July 1877 about Swamiji, in which has liberal, cultured and progressive thoughts have been presented his views are often liberal and most of the views are of the schoolarly thoughts are still relevant in today`s time. His brain seems to be very progressive, national sympathy and great enthusiasm for societal reform are clearly visible. He was not only desirous of religious reforsm but also keeps in view the reformation of all caste evils, such as those spreading in the country.

To remove ignorance and partiality, to propagate Basis of Swami Ji`s social reform work was regarding his deep study of the society. This study was based on the real condition of the society i.e. truth and his thoughts about truth were very clear. While writing his Amar Granth known as, "Satyarth Praksh", Swami ji has given details that the purpose of his book is to render what is true as truth and what is false as false, which is the actual meaning of SatyekeArthonka Prakash. He has also said that it is not called truth which publishes falsehood in place of truth and truth in place of falsehood, but saying, writing and believing the substance as it is: is called truth. He opposed the evil practice like child marriage while accepting the reality of the social conditions of that time.

He knew from street to street that a large section of the society would not consider opposing this practice appropriate, but he could not accept any kind of practice in the development of man, because it was an obstaele in the path of truth. Swami Dayanand has learned on scientific basis from Ayurveda`s Charak etc. that at what age maturity comes in men and women. That`s why he strongly believed that bad practices like child marriage are hindrances for a healthy man an a healthy society. There is a scientific reason behind opposing child marriage, that reproductive capacity and process of a girls is on the border between 12 years to 19 years and at this stage man is not fully developed mentally and physically, so he raised the age of marriage of man and woman, as was determined that is should be performed when they are fully developed and matured mentally and physically. He proclaimed at that time that the minimum age of marriage for the girl should be 18 years and that of the boy should be 25 years, way before the actual implementation of this law in the Indian society.

Continuous dynamism and progressive ideology is cleary visible in Swami Dayanand`s thinking and actions. Along with the religious and social field, he also gave more progressive ideas in the political and administrative fields as compared to his contemporary social reformers. Not only was his aim to bring changes in the religious field, he was also fully aware of the inferior condition of the country. His belief was formed on the basis that the judical system prevailing in the English language is defective. He strongly believed that the Panchayat system prevalent in ancient times, in which the disputes between the residents were settled by sitting together, considering the village as a unit, gram panchayat system in India which is still prevalent in the rural parts of the country showcases the farsightedness of Maharishi Dayanand Saraswatiji. Thus, if anyone wants to enlighten himself about the Indian society`s potential, they should refer to the Satyarth Prakash written by Maharishi Dayanad Saraswatiji. We all must try our level best to keep on going on the path which was clearly laid down for us by Maharishi Dayanand Saraswatiji.

વેદ વિષે આટલું જરૂરથી જાણો! – ભાગ ૧

વેદ એટલે જ્ઞાન. 'વેદ' શબ્દનો અર્થ 'જ્ઞાન' થાય છે. વેદ શબ્દ મૂળ ધાતુ 'વિદ' કે જેનો અર્થ 'જાણવું' થાય છે, તેમાંથી આવ્યો છે. સર્વવ્યાપી અને સર્વજ્ઞ ઈશ્વરે વેદનું જ્ઞાન શ્રુષ્ટિ સર્જન સમયે સમગ્ર માનવમાત્રના કલ્યાણ માટે આપ્યું હતું.

સત્ય ૨ વેદ એ માત્ર "પુસ્તક" નથી.

વેદ એટલે શાશ્વત જ્ઞાન. વેદ એટલે સર્વકાલિક અને સાર્વભૌમિક જ્ઞાન.

જેમ કોઈ વ્યક્તિને ચિત્ર સ્વરૂપે જોવી હોય તો એનો ફોટોગ્રાફ કામમાં આવે છે, એવી જ રીતે જયારે વેદ જ્ઞાનને શ્રવણ-સંબંધી બનાવામાં આવે છે ત્યારે આ જ્ઞાન શબ્દમય હોય છે. ઉદાહરણ તરીકે મંત્રોચ્ચાર. જ્યારે આ જ્ઞાનને નેત્ર-સંબંધી બનાવવામાં આવે છે ત્યારે આ જ્ઞાન દ્રષ્ટિમય હોય છે. ઉદાહરણ તરીકે વેદ ગ્રંથો.

બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો, વેદ નિત્ય જ્ઞાન છે. આ જ્ઞાનને ધ્વનિમાં દર્શાવવાનો શ્રેષ્ઠ રસ્તો છે મંત્રોચ્ચાર અને અક્ષરોમાં દર્શાવવાનો શ્રેષ્ઠ રસ્તો છે 'વેદ સંહિતાઓ.'

આજનાં સમયમાં આ અક્ષર જ્ઞાનનો ઉપયોગ કરી વેદને સમજવામાં ઘણી સરળતા રહે છે.

સત્ય ૩ વેદ સંહિતાઓ "મંત્રો"નો સંગ્રહ છે.

વેદ સંહિતાઓ મંત્રોનો સંગ્રહ છે. વેદ સંહિતાઓને મુખ્યત્વે ચાર ભાગમાં વિભાજીત કરવામાં આવી છે.

- **ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ, અથર્વવેદ**

વેદોની ઋચાઓ "મંત્ર' કહેવાય છે. વેદ સિવાયના અન્ય સંસ્કૃત સાહિત્યોની ઋચાઓ 'શ્લોક' કહેવાય છે. વેદ મંત્રોમાં સમાવિષ્ટ વિષય વસ્તુમાં તો શું, વેદ મંત્રોના ઉચ્ચારણમાં પણ કોઈ પ્રકારનો ફરફાર થઈ શકતો નથી. આથી કોઈ સામાન્ય વ્યકિત વેદ મંત્રોના ઉચ્ચારણ પર ધ્યાન આપ્યાં વગર ભલેને વેદ મંત્રોનો પાઠ કરતો હોય, પણ દરેક મંત્રોના દરેકે દરેક શબ્દંશનું ઉચ્ચારણ એક વિશિષ્ટ પદ્ધતિથી થાય છે. જો તમે વેદ મંત્ર સંહિતાને ધ્યાનથી જોશો તો તમને અક્ષરોની પાછળ અને ઉપર કેટલાંક ચિન્હો કે માત્રાઓ જોવા મળશે. આ ચિન્હો અને માત્રાઓ વેદ મંત્રોના ઉચ્ચારણની ખાસ રીત દર્શાવે છે.

સત્ય ૪ વેદનું જ્ઞાન સૌ પ્રથમ ચાર ઋષિઓને મળ્યું.

શ્રુષ્ટિના આરંભમાં ઈશ્વરે ચાર ઋષિઓના અંતઃકરણમાં વેદોનું જ્ઞાન પ્રગટ કર્યું. આ ઋષિઓમાં તેમના પૂર્વ જન્મના કર્મોને કારણે ઉત્તમ સંસ્કારોનું નિર્માણ થયું હતું અને એટલે જ તેઓ આ જન્મમાં વેદોનું જ્ઞાન ગ્રહણ કરવામાં અને પછી અન્ય મનુષ્યોને વેદોની શિક્ષા આપવામાં સર્વસમર્થ અને યોગ્ય હતા.

શ્રુષ્ટિ સર્જન અને વિનાશનું ચક્ર નિરંતર ચાલતું જ રહે છે. આથી જયારે નવી શ્રુષ્ટિનું સર્જન થાય છે ત્યારે વેદ જ્ઞાનને આત્મસાત્ કરવા માટે અને તેનો પ્રચાર પ્રસાર કરવા માટે જે ઉત્તમ જીવાત્માઓ હોય છે તે જીવાત્માઓના હદયમાં ઈશ્વર વેદનો પ્રકાશ કરે છે.
આ શ્રુષ્ટિના સર્જન સમયે જે ચાર ઋષિઓના હદયમાં ઈશ્વરે વેદનો પ્રકાશ કર્યો હતો તે આ પ્રમાણે છે:

- અગ્નિ ઋષિ – ઋગ્વેદ, વાયુ ઋષિ – યજુર્વેદ, આદિત્ય ઋષિ – સામવેદ, અંગીરા ઋષિ – અથર્વવેદ

સત્ય ૫

વેદનું જ્ઞાન ચાર ઋષિઓના અંતઃકરણમાં પ્રકટ થયું.

મંત્રો, મંત્રોના અર્થ અને ઉચ્ચારણ – એમ એકસાથે વેદનું સંપૂર્ણ જ્ઞાન સૌ પ્રથમ આ ચાર ઋષિઓને મળ્યું. આપણી અજ્ઞાનતા અને સીમિત બુદ્ધિને કારણે આમ માની લેવું કદાચ આપણાં માટે શક્ય નથી. પણ જીવાત્મા જ્યારે ઈશ્વરના સાનિધ્યમાં હોય છે ત્યારે પૂર્ણતાની આવી આદર્શ સ્થિતિમાં જ્ઞાન, ભાષા અને ઉચ્ચારણ એક બીજાથી અલગ ન રહી એકાકૃત થઈ જાય છે.
જેમકે, બાળક જયારે મંદ હાસ્ય આપીને પોતાની માતાને "માં" કહીને સંબોધે છે ત્યારે માતા માટે સંબોધાયેલો "માં" શબ્દ, શબ્દનો અર્થ, તેનું ઉચ્ચારણ, તેની ભાષા, અને તે સમયે અનુભવાતો માતૃત્વનો ભાવ એકબીજાથી અલગ ન રહી એકાકૃત થઈ જાય છે. આ જ રીતે જ્યારે મન નકારાત્મક વૃત્તિઓથી ખાલી થઈ ઈશ્વરમાં સ્થિર થાય છે ત્યારે ઈશ્વરીય જ્ઞાનની (વેદ) ભાષા, અર્થ અને ઉચ્ચારણનો અનુભવ એક સાથે થાય છે. શ્રુષ્ટિ સર્જન સમયે આ ચાર ઋષિઓ પણ આવી જ ઉન્નત (ઈશ્વરમાં સમાંવિષ્ટ) અવસ્થામાં હતા અને આથી જ તેઓને વેદ મંત્રો, મંત્રોના અર્થ અને ઉચ્ચારણનું જ્ઞાન એક સાથે થયું.

महर्षि दयानन्द सरस्वती का दार्शनिक चिन्तन

❐ ब्रह्मचारी मोहन आर्य (श्रुतबन्धु)

जब इस भारत देश में अविद्या अन्धकार के बादल छाये हुए थे, अनेकों कुरुतियाँ फैली हुई थीं। भारत देश अज्ञानता के समुद्र में डूबता जा रहा था। गुरु विरजानन्द सदृश महानुभाव चिन्तित थे कि अब इस भारत देश का उद्धार कौन करेगा, ऐसे विकट संकटों में 12 फरवरी 1824 को गुजरात राज्य के टंकारा ग्राम में श्री कर्षण जी तिवारी के घर ऐसा सत्पुत्र सूर्य उदय हुआ जिसने गुरु विरजानन्द के सपनों को साकार करते हुए इस भारत देश को अविद्या अन्धकार आदि भयानक परिस्थितियों से बचाया। कवि मेधाव्रत जी ने ठीक ही कहा है- **अविद्यातिध्वान्तं दिशि दिशि ततं चेतसि नृणाम्, तमोभिस्तान्तानां श्रुतिरविकराक्रान्तहृदयः। द्विजालीशाली यो ह्यमृतमयगोभिर्दलितवान्, दयानन्दं वन्दे सकलजगदानन्दनविधुम्॥** निश्चय ही जिस दयानन्द ने वेद रूपी सूर्य कि किरणों से अपने हृदय को व्याप्त किया और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विजों में शोभा पाकर अमृत भरे किरणों रूप मुक्ति प्रवचनों से सर्वत्र अंधकार से ढके हुए नर नारियों के चित्त में फैले हुए अविद्या अंधकार को विनष्ट किया उस सम्पूर्ण जगत् को आनन्दित करने वाले चंद्ररूप दयानन्द की मैं प्रशंसा व उन्हें नमन करता हूं। ऋषि दयानन्द सरस्वती आज भी हमारे हृदय में ब्रह्मवित्, वेदवित्, धर्मवित् एवं दर्शनवित् हैं। विश्व में ऋषि जी की प्रतिष्ठा अत्यधिक रूप से समाज सुधारक के रूप में देखी जाती है। ऋषि जी ने समाज का सुधार किस प्रकार किया, अगर इसका मूल कारण देखें तो दयानन्द जी के दार्शनिक विचार ही थे। स्वामी दयानन्द जन्मजात दार्शनिक थे। इस कारण नहीं कि वे प्रारम्भ से उदासमुख थे अपितु इस कारण कि भावी दार्शनिक की भाँति बाल्यकाल से उनकी आत्मा में जीवन की जटिल समस्याओं का हल खोजने की ललक भी थी, वे उन समस्याओं का बौद्धिक हल ही नहीं चाहते थे, वे तो इसमें अन्तर्निहित सत्य का साक्षात्कार चाहते थे। इसी प्रयोजन से उनके जीवन में बचपन में शिवलिंग के ऊपर चूहे चढ़ना, चाचा एवं बहन की मृत्यु हो जाना ऐसी घटनाएँ घटी, जिनके कारण ऋषि जी 1846 को सत्य की खोज में निकल पड़े और गुरुवर विरजानन्द दण्डी जी से शिक्षा प्राप्त की। गुरु-दक्षिणा में दण्डी जी ने मांगा कि आर्ष विद्या के द्वारा मानव उन्नति को प्रशस्त करो। उस भयंकर अवनति के काल में दयानन्द ने अनुभव किया कि जहां अन्य श्रेष्ठतायें अवनति के मार्ग में जा रही हैं वहीं दर्शन विद्या के साथ भी घोर अन्याय हो रहा है।

सर्वप्रथम दर्शन शब्द का अर्थ क्या है। दार्शनिक विद्वानों ने दर्शन शब्द की परिभाषा निम्न प्रकार से की है-**दृश्यन्ते ज्ञायन्ते याथातथ्यत आत्मपरमात्ममनो बुद्धीन्द्रियादयोऽतीन्द्रियाः सूक्ष्मविषया येन तद् दर्शनम्।** अर्थात् जिससे, आत्मा, परमात्मा, मन, बुद्धि, इन्द्रियों आदि सूक्ष्म विषयों का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, उसको दर्शन कहते हैं। साहित्यालोक में नास्तिक एवं वैदिक इन दो विभागों में विभक्त दर्शन नाम से अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। वैदिक दर्शनों के मध्य न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त इन छः का परिगणन होता है। वैदिक दर्शनों की प्रथम सबसे बड़ी विशेषता उनका व्यावहारिक पक्ष है। उनका उद्देश्य है नाना प्रकार के दुःखों से पीड़ित मनुष्यों को राग-द्वेष अविद्या से छुड़ाकर मोक्ष की प्राप्ति करा देना।

वैदिक दर्शनों की प्रथम सबसे बड़ी विशेषता उनका व्यावहारिक पक्ष है। उनका उद्देश्य है नाना प्रकार के दुःखों से पीड़ित मनुष्यों को राग-द्वेष और अविद्या से छुड़ाकर मोक्ष की प्राप्ति करा देना। वैदिक दर्शन की दूसरी विशेषता है-आशावाद! दुःखमय वर्तमान से असन्तोष हुए बिना सुखमय भविष्य की कल्पना दुराशामात्र ही है। इस जगत् पर दृष्टि पात करने पर विवेकी जन इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह संसार नितान्त दुःखमय है। इस दुःख का कारण द्रष्टा और दृश्य का संयोग है। इस दुःख को दूर करना है और दुःख को दूर करने के लिए मार्ग खोजना है। इस प्रकार वैदिक दर्शन वर्तमान दशा से असन्तोष प्रकट कर उसके सुधारने का प्रयन्त करता है। वैदिक दर्शन की तीसरी विशेषता है-नैतिक व्यवस्था में विश्वास। मनुष्य जो कर्म करता है, उनका लोप नहीं होता अपितु उन कर्मों से एक अपूर्व की सृष्टि होती है। यही अपूर्व फलोत्पत्ति का प्रधान कारण है। न्याय-वैशेषिक में इसी अपूर्व को अदृष्ट की संज्ञा दी गई है। वैदिक दर्शन की चौथी विशेषता है-कर्मसिद्धान्त। मनुष्य जो भी कर्म करता है, उसका नाश कभी नहीं होता तथा जिस फल को हम भोग रहे हैं, वह पूर्वजन्म में किये हुए कर्म का ही फल है। कर्म-सिद्धान्त को स्वीकार कर मनुष्य जहाँ एक ओर पाप करने से बच जाता है, वहीं दूसरी ओर शुभ कर्मों के अनुष्ठान से अपने आगामी जीवन को उच्च दिव्य एवं महान् बना सकता है। वैदिक दर्शन की पांचवी विशेषता है-मोक्षमार्ग का निर्देश। संसार में बन्धन का कारण है अविद्या। अविद्या से बन्धन होता है और ज्ञान से मुक्ति। जीवन यापन के दो मार्ग है प्रेय और श्रेय। श्रेय मार्ग मनुष्य के मंगल का मूल है। दर्शनकार इस मंगल मार्ग पर आरूढ़ रहता है।

वैदिकदर्शन में मध्यकालीन वाचस्पतिमिश्र, उदयनाचार्य, गौणपाद, बल्लभाचार्य, शंकराचार्य आदि ने आचार्यो के सम्प्रदाय-प्रवाद की द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि मान्यताओं को पुष्ट करते हुए भाड्दर्शनों को एक दूसरे का विरोधी, एकांणि विषय वाला बना दिया था। ऐसा माना जाता था कि वैशेषिक परमाणुवाद एवं असत्कार्यवाद का प्रतिपादक है सांख्य गुणवाद तथा सत्कार्यवाद का पोषक है और अनीश्वरवादी है, वेदान्त ब्रह्म की माया अर्थात् विवर्त्त का जंजाल है, मीमांसा कर्मकाण्ड और न्याय वस्तुवादी दर्शन है। परन्तु स्वामी दयानन्द जी उपरोक्त सम्प्रदायवाद से यत्किंचित् भी सहमत नहीं हुए और उलझे हुए दर्शनों पर समस्त विश्व के समक्ष स्पष्टता के साथ अपना विशिष्ट चिन्तन रखते हुए सत्यार्थप्रकाश के तृतीय व अष्टम समुल्लास में कहते हैं-**'दर्शनों में विरोध नहीं अपितु वे तो एक दूसरे के पूरक हैं। सृष्टिविद्या के भिन्न-भिन्न छः अवयवों का छः शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं। सृष्टि का जो कर्म कारण है उसकी व्याख्या मीमांसा में, समय की वैशेषिक में, उपादान कारण की न्याय में, पुरुषार्थ की योग में तथा तत्त्वों के परिगणन की व्याख्या सांख्य में और निमित्त कारण जो परमेश्वर है उसकी व्याख्या वेदान्तशास्त्र में है, इससे कुछ भी विरोध नहीं'** दार्शनिक शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती इस विषय में लिखते हैं-जैसे एक विद्या में अनेक विद्या के अवयवों का एक-दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि-विद्या के भिन्न-भिन्न छह अव्यवों का छह शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं। जैसे घड़े के बनाने में कर्म, समय, मिट्टी, संयोग-वियोगादि का पुरुषार्थ, प्रकृति के गुण और कुम्भकार कारण हैं, वैसे ही सृष्टि का जो कर्म कारण है उसकी व्याख्या मीमांसा में, समय की व्याख्या वैशेषिक में, उपादान कारण की व्याख्या न्याय में, पुरुषार्थ की व्याख्या योग में, तत्त्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या सांख्य में और निमित्त कारण जो परमेश्वर है, उसकी व्याख्या वेदान्त शास्त्र में है। इससे कुछ भी विरोध नहीं है। जैसे वैद्यक शास्त्र में निदान, चिकित्सा, औषधदान और पथ्य के प्रकरण भिन्न-भिन्न

कथित हैं परन्तु सबका सिद्धान्त रोग की निवृत्ति है, वैसे ही सृष्टि के छह कारण हैं। इनमें से एक-एक कारण की व्याख्या एक-एक शास्त्रकार ने की है। इसलिए इनमें कुछ भी विरोध नहीं। आगे चलकर सृष्टि-प्रकरण में ऋषिवर लिखते हैं-विरोध उसको कहते हैं कि एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्धवाद होवे। छह शास्त्रों में अविरोध देखो इस प्रकार है-मीमांसा में-ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नहीं होता कि जिसके बनाने में कर्म-चेष्टा न की जाए। वैशेषिक में-''समय लगे बिना बने ही नहीं। न्याय में उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता। योग में विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाए (तो नहीं बन सकता)। सांख्य में-तत्त्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता, और वेदान्त में-बनानेवाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न न हो सके। इसलिए सृष्टि छह कारणों से बनती है उन छह कारणों की व्याख्या एक-एक की एक-एक शास्त्र में है। इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं। जैसे छह पुरुष मिलकर एक छप्पर उठाकर भित्तियों पर धरै वैसे ही सृष्टि-रूप कार्य की व्याख्या छह शास्त्रकारों ने मिलकर पूरी की है। जैसे पाँच अन्धे और एक मन्द-दृष्टि को किसी ने हाथी का एक-एक देश बतलाया। उनसे पूछा कि हाथी कैसा है उनमें से एक ने कहा खंभे जैसा, दूसरे ने कहा सूप जैसा, तीसरे ने कहा मूसल जैसा, चौथे ने कहा झाड़ू जैसा, पांचवे ने कहा चौंतरा जैसा और छहे ने कहा काला-काला चार खंभो के ऊपर कुछ भैसा-सा आकारवाला है। इसी प्रकार आज कल के अनार्ष नवीन ग्रन्थों को पढ़ने और प्राकृत भाषावालों ने ऋषि-प्रणीत ग्रन्थ न पढ़कर नवीन क्षुद्र बुद्धिकल्पित संस्कृत और भाषाओं के ग्रन्थ पढ़कर एक-दूसरे की निन्दा में तत्पर होके झूठा झगड़ा मचाया है। इनका कथन बुद्धिमानों के वा अन्य के मानने योग्य नहीं। ऋषि दयानन्द सभी दर्शनों को ईश्वरवादी मानते हैं और कहते हैं जगत् का ईश्वर निमित्त कारण है, उपादान नहीं, जीव ब्रह्म अलग-अलग हैं, मुक्ति से पुनरावर्तन होता है आदि। अशेषशेमुषी सम्पन्न महर्षि दयानन्द दर्शन शास्त्र को विश्व के समक्ष अद्‌भुत ढंग से प्रस्तुत करते हैं। महर्षि जी ने अपने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में दर्शनों के प्रमाण देकर फिर से दर्शनों को शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया। ऋषि जी ने ग्रन्थों में दर्शनों के कुछ प्रमाण इस प्रकार है-**मंगलाचरणं शिटशचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति। सांख्य दर्शन अथातो ब्रह्मजिज्ञासा चतुष्टयसाधनसंपत्यनन्तरं ब्रह्म जिज्ञास्यम्। वेदान्तदर्शन, प्राणायामादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः। योग दर्शन, अथ तत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्वच्छेषवत्सामान्यातोदृष्टंच। न्याय दर्शन, रूपरसगन्धस्पर्शवती पृथिवी। वैशेषिक दर्शन, अथातो धर्मजिज्ञासा अथेत्यानन्तर्ये वेदाध्ययनानन्तरम्। मीमांसा दर्शन। दयानन्द की दृष्टि में धर्मका दार्शनिक स्वरूप- यतोऽभ्युदयानिः श्रेयससिद्धि स धर्मः वैशेषिक दर्शन 1.1.2** जिससे अभ्युदय एवं निःश्रेयस की प्राप्ति होती है, वह धर्म है। दयानन्द जी इस सूत्र का भाव ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोक्तविषय में इस प्रकार प्रकट करते हैं- **यस्याचरणादभ्युदयः सांसारिकमिष्टसुखं सम्यक् प्राप्तं भवति, येन च निःश्रेयसं पारमार्थिकं मोक्षासुखं च, स एवं धर्मो विज्ञेयः। अतो विपरीतो ह्यधर्मश्च।।** जिसका आचरण करने से संसार में उत्तम सुख और निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है, उसी का नाम धर्म और उससे विपरित अधर्म होता है।

दयानन्द की दृष्टि में दर्शनाधारित सत्य का स्वरूप- महर्षि जी सत्य को सिद्ध करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक में लिखते हुए प्रस्तुत करते हैं कि मेरा इस ग्रंथ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य सत्य अर्थ का प्रकाश करना है जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहता है जो सत्य है उसको सत्य जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना मैंने सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है।

- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, हौसंगाबाद, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश-411001, मो. 9399656477

(पृष्ठ 7 का शेष)

कृतघ्न न होवें। पुरुषार्थी रहें, आलसी कभी न हों, जिस-जिस कर्म से विद्या-प्राप्ति हो, उस उस को करते जायें। जो-जो बुरे काम जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक आदि विद्याविरोधी कर्म हों, उनको छोड़कर सदा उत्तम गुणों की कामना करें। बुरे कर्मो पर क्रोध, विद्या ग्रहण में लोभ, सज्जनों से मोह, बुरे कर्मो से भय, विद्यादि शुभ गुणों से आत्मा की रक्षा से जितेन्द्रिय होकर शरीर का बल सदा बढ़ाते जायें।'' तभी बाल व्यक्तित्व के निर्माण में शिक्षकों की अहम भूमिका कारगर हो सकती है।

10. योग्य शिक्षकों की हर युग में आवश्यकता- जिस प्रकार सुयोग्य वैद्य, चिकित्सक रोग की खोज करके उचित उपचार और दवा बताते हैं, उसी प्रकार उत्तम शिक्षक व ज्ञान देकर मुक्ति का, कष्टों से बचने का, सुख का, शान्ति का मार्ग बताते हैं। 'गुरु' के मार्ग दर्शन के बिना चंचल मन वश में नहीं, 'मन' का अन्धेरा दूर नहीं हटता। जिस प्रकार मुकदमे में हम योग्य वकील का परामर्श लेते हैं। रास्ता भूल जाने पर, बड़े से विद्वान राह जाते राहगीर से रास्ता पूछते हैं। उसी प्रकार संसार को समझने के लिए, नाना विद्यायें, शिक्षायें ग्रहण करने के लिए योग्य शिक्षक, योग्य अध्यापक अथवा योग्य गुरु की खोज करते हैं।

11. शिक्षक हमारे राष्ट्र के गौरव हैं- भाइयो! और बहिनो! शिक्षक हमारे राष्ट्र के गौरव हैं। वे हमें विद्या देते हैं। हमारा अज्ञान दूर करते हैं। जीवन में भले-बुरे की पहचान करना सिखाते हैं। इसलिए अपने शिक्षकों का सदा सम्मान करना चाहिए। क्योंकि वह बाल व्यक्तित्व के निर्माण में, उनकी प्रतिभा के विकास में सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। हम आशा करते हैं कि देश का सारा शिक्षक वर्ग, ईमानदारी से अपने देश के भविष्य इन बालकों का, भविष्य निर्माण करने वाला सिद्ध होगा। इसी में बच्चों का, शिक्षा जगत् का, देश के भावी नागरिक छात्रों का और सारे देश का वास्तविक कल्याण है। किसी कवि ने सत्य ही कहा है-

अच्छे आदर्शो का अभिनय, प्यारे बच्चों से करवाओ, खेल-खेल में सच्चरित्रता की, उनमें बुनियाद बनाओ।।
यदि भविष्य उज्ज्वल करना है, तो बच्चों पर देना ध्यान। बच्चे शिक्षित स्वस्थ बनेंगे, तो आयेगा सुखद विहान।।
शिक्षक भाइयो! बालक के बारे में सोचो, बालक है हर घर की आशा।
सब मिल बालक का हित साधो है भविष्य की वह परिभाषा।। जो देखेंगे वही करेंगे, बच्चों का है सहज स्वभाव।
बुरे दृश्य से उन्हें बचाओ, उनसे होगा सुखद प्रभाव।।

- 94 विकासनगर, फेस-3, हस्तसाल एरिया, निकट बाला जी मन्दिर, नई दिल्ली-110059, दूरभाष725374627

प्रकृति का महोत्सव

❑ यशपाल सुधांशु

भारत देश अपनी गरिमामयी परम्पराओं से, आध्यात्मि सम्पदाओं से, संस्कृति सभ्यता की विशेषताओं से सम्पन्न रहा है। इन्हीं विशेषताओं में एक विशेषता है यहां के पर्व (त्यौहार)। संसार के सभी वर्ग सम्प्रदाय एवं जातियों में और देशों में कोई न कोई दिन नियत है जब वे अपने समस्त दु:ख दर्द भुला कर उत्सव मनाते हैं। व्यक्ति विषाद अवसाद में घिरा न रहे एक ही रस में वह खिन्न न हो जाये, वह जीवन के समस्त रंगों रसों का स्वाद ले सके। इसी धारणा को ही लेकर सम्भवत: हमारे पूर्वजों ने पर्वों की संरचना की थी। समस्त विश्व में सबसे अधिक पर्व भारत में ही मनाये जाते हैं।

वसन्त ऋतु का आगमन हो गया है। नौ रसों से रसित, नव रंगो के परिधानों से विभूषित प्रकृति अपनी नाट्य कला का समस्त भुवन में परिचय दे रही है।

सेम्बल की ऊँची-ऊँची डालियों पर खिलते लाल-लाल फूल, खेत में फूलती पीली-पीली सरसों, बागों में महकती अमराई, वन की कंटीली झाड़ियों में सजे फूलों के गुच्छे, शुष्क वृक्षों की चोटियों से निकलते अंकुर, पर्वत की उजड़ी श्रृंखला पर उगती हरी-हरी घास और ऊँचे शिखर से धरती के सीने पर गिरता गर्जता झरना, मचलती इठलाती नदियों की निर्मल धारा, बांसों के झुरमुट से आती पपीहे के मधुर रागिनी, कोयल और बुलबुलों की कूक से गूंजते उपवन, यह महोत्सव है उस परम विधाता की सृष्टि का, जो महोत्सव अविराम चल रहा है। हर ऋतु मोहक उत्सव लेकर आती है और कहकर जाती है मानव क्यों तू निराश है, उठ! उत्सव मना, गुनगुना, खिलखिला झूम झूम कर उस परम आनन्ददाता के गीता गा। जब प्रकृति में उत्सव है फिर मानव जीवन में पर्वों का, उत्सवों का उल्लास क्यों न हो, ऐसा ही एक उल्लास है होली। जी हां, होली जो यज्ञ का अपभ्रंश है। नवीन फसल के आगमन की खुशी का महोत्सव है। समस्त भेदभाव भुलाकर गले मिलाकर एक हो जाना और आन्नद सिन्धु में डूब जाना इसका सन्देश है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया था-उत्सव अमार जाति आनन्द अमार गोत्र। उत्सव ही हमारी जाति है और आनन्द ही हमारा गोत्र है। सब कुछ भूलकर आनन्द उत्सव में मस्त हो जाना पर्व है।

वेद में कहा है-हसा मुद: हसा मृत:। प्रसन्नता में झूम और हंसते-नाचते जीवनयापन कर। जीवन में समस्याएं हैं कठिनाइयां भी हैं परन्तु उन्हीं से दु:खी होते रहने से जीवन कुसुम मुरझा जाता है।

इस ऋतु में गेहूं, चना, मटर, सरसों, जौ आदि के पकने की दशा में यह पर्व मनाया जाता है। रूस में फसल काटने पर किसान अपने सगे सम्बन्धियों एवं मित्रों को दावत देकर उत्सव मनाते हैं। जापान में धान की फसल कटने पर उत्सव मनाते हैं। चावल की रोटियां एवं मादक द्रव्यों से आनन्द मनाते हैं। इंग्लैण्ड में पोल का उत्सव मनाया जाता है। यूरोप में सेन्ट वेलन्टाइन का दिवस मनाया जाता है।

इस प्रकार की उत्सव परम्परा होली भी है। परन्तु आज यह पर्व बड़ा विकृत रूप ले चुका है। असभ्य और अशिष्ट बनकर रंग फेंकना, गरीबों के एक दो मात्र वस्त्र को रंग देकर बेकार कर देना तथा गोबर, कीचड़, तेजाब, रेत आदि प्रमत्त होकर फेंक देना मनुष्यता से नीचे गिरना है। होली के पर्व को भांग, शराब पीकर ऊधम मचाने वालों ने भी गंदा कर दिया है।

रंग की आड़ में अश्लीलता भी हेय है। हमारी संस्कृति में भाभी आदि को माता की दृष्टि से देखा जाता है। उनके साथ अभद्रता का व्यवहार होली की आड़ लेकर करना अधमता है। सभी सभ्य जनों को ये दोष दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। हर नौजवां को अपनी हिम्मत और शक्ति से दीन दु:खियों के आंसू पोंछ खुशियों के फूल खिलाते रहना चाहिए। ''जोश'' ने सच कहा है-

नवीन युग के उपासना की अभिलाषा की तुझे कसम है,
तू अब नये, विचारों के भगवान पैदा कर।
बहार में तो जमीन से ही बहार उग आती है,
गर तू मर्द है तो खिजां में बहार पैदा कर॥

आवश्यक सूचना

टंकारा समाचार इंटरनेट एवम् वट्सअप पर उपलब्ध। सभी सदस्य पाठकों से अनुरोध है कि अपना ई-मेल पता एवम् वट्सअप मोबाइल नम्बर **9560688950** पर **सदस्य संख्या एवम् नाम सहित** भेजे ताकि हम पंजीकृत कर सके जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मत में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 12000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

सुख, शान्ति और समृद्धियों का आधार सत्य

❒ डा. अशोक आर्य

मानव जीवन में मनुष्य सदा से ही सुखों की खोज करता रहा है। प्रत्येक व्यक्ति सुख प्राप्ति के लिए इधर-उधर भटकता रहता है, किन्तु सुख उसे कुछ भी नहीं मिलता। क्या कारण है कि जिस सुख को पाने के लिए वह अनेक स्थानों पर भटक रहा है, नदियों, नालों, पर्वतों व जंगलों की खाक छान रहा है किन्तु सुख उसे तो भी नहीं मिल पा रहा अपितु वह जितना सुख के पीछे भाग रहा है, सुख उससे उतना ही दूर जा रहा है। क्या कारण है? जब हम इस दूरी का कारण खोजने का प्रयास करते हैं तो हमें पता चलता है कि जिस सुख को खोजने के लिए हम इधर-उधर भटक रहे हैं, वह सुख कोई खोजने से मिलने वाली वस्तु नहीं है। सुख तो प्रयास से अर्जित होता है। इसे पाने के लिए पुरूषार्थ की आवश्यकता होती है। यदि हम अपने जीवन में काम ऐसे करें जिन से दु:ख ही दु:ख मिले तो सुख की कामना मात्र से क्या होगा? जब कि हमने सुख प्राप्ति का कार्य तो कोई किया ही नहीं। जब तक हम सुख पाने के लिए पुरूषार्थ नहीं करेंगे, तब तक तोते की भान्ति चाहे सुख-सुख शब्द की जितनी चाहे माला फेर लें, कुछ होने वाला नहीं है। परम पिता परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में मानव मात्र के कल्याण के लिए चार वेदों का ज्ञान दिया है। इस ज्ञान में ही सुख प्राप्ति का मूल मन्त्र दिया है। वेदों में यत्र तंत्र ऐसे अनेक मन्त्र मिलते हैं, जिनसे मार्ग-दर्शन पा कर हम सच्चे सुख को पाने की सिद्धी पा सकते हैं। अत: आओ हम वेद से ऐसे मन्त्रों को खोज कर सच्चे सुख को पाने का मार्ग प्राप्त करने का प्रयास करें। इस मार्ग से सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।

वेद में सुख, समृद्धि व धन ऐश्वर्य प्राप्ति का साधन सत्य को बताया है, सत्य पर ही संसार टिका है। सत्य ही संसार का आधार है। सत्य नहीं तो कुछ भी नहीं। अथर्व वेद के मन्त्र 14.1.1 में इस तथ्य की ओर ही इंगित करते हुए इस प्रकार कहा है-

सत्येनोत्तभिता भूमि: सूर्येनोत्तभिता द्यौ:!
ऋतेनादित्यास्तिष्टन्ति दिवि सोमो अधि श्रित:!! अथर्व 14.1.1।।

इस मन्त्र में सत्य की अत्यन्त मार्मिक व्याख्या करते हुए कहा है कि यह सत्य ही है जिस पर यह पृथ्वी टिकी है। इतना ही नहीं सूर्य से द्युलोक टिका है। किन्तु सूर्य को टिकने का कुछ तो आधार चाहिए ही, अन्यथा वह कैसे टिक पावेगा? वेद इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता है कि यह भी सत्य ही है कि जिस पर सूर्य भी टिका है। सत्य अर्थात् सोमगुण से भरपूर वह परमात्मा द्युलोक में व्याप्त है। अत: यह सत्य ही है जो पृथ्वी का आधार है, विश्वास है, इसी से ही प्रेम का बीज अंकुरित होता है। इस सत्य से ही मनुष्य दृढ़ बनता है तथा सर्वत्र विश्वास व सफलता अर्जित करता है। जब हम सोम को प्राप्त करते हैं तो हम पाते हैं कि यह भी सत्य का ही आनन्द स्वरूप है। सत्य ही सब प्रकार के ज्ञान का केन्द्र है। इस प्रकार वेद मन्त्र हमें बताता है कि जब सत्य ही सब कुछ हमें दे सकता है तो हम इस सत्य को क्यों न अपनाएं?

ऋग्वेद ने तो सत्य को सब प्रकार के सुखों का आधार बताते हुए इस प्रकार कहा है:-

शं नो भग: शमु न: शंसो अस्तु, शं न: पुरन्धि: शमु सन्तु राय:।
शं न: सत्यस्य सुयमस्य शंस:, शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु॥

ऋ 7.35.2।।

इस मन्त्र में हमारे कल्याण व सुख-समृद्धि, कीर्ति व ऐश्वर्य की कामना करते हुए कहा है कि यह सब हमारे लिए सुखदायी हों। सत्य व संयम तो हमारे लिए सुखदायी हों ही, इसके साथ ही साथ न्याय व उदारता का देवता, जो अर्यमा के नाम से जाना जाता है, वह भी हमें सुख देने का साधन बने।

इससे आगे चल के इस मन्त्र के माध्यम से हम पुन: परम पिता से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु! सत्य के रक्षक जितने भी देवगण हैं, वह सब हमारे लिए कल्याण के कार्य करें। यह ऋग्वेद का 7-35-12 मन्त्र है, जो इस प्रकार है:-

शं न: सत्यस्य पतयो भवन्तु, शं नो अर्वन्त: शमु सन्तुगाव:।
शं न: ऋभव: सुकृत: सुहस्ता:, शं नो भवन्तु पितरो हवेषु॥

ऋ 7.35.12।।

जो देवता सत्य के रक्षक हैं, वह सब हमारे लिए कल्याणकारी हों। हे प्रभु! हमारे यह घोड़े तथा गायें भी हमारा शुभ करने वाली हों, हमारा कल्याण करने वाली हों। सत्यकर्मो में सदा रत रहने वाले कर्मशील, सिद्धहस्त शिल्पी गण हमारे लिए सुखदायक शिल्प के कार्य करते रहें। हमारे पितृगण सब यज्ञों में हमें सुख दें। इस प्रकार यह मन्त्र इस बात को स्पष्ट करता है कि जीवन में सत्य के साथ ही साथ पुरूषार्थ की भी आवश्यकता होती है। शिल्प से आत्म-निर्भरता आती है, जो सुख का साधन है। अत: जीवन में सत्य व सत्कर्म को आधार बनाते हुए शिल्प अर्थात पुरूषार्थ द्वारा विशेष योग्यता अर्जित कर आजीविका के साधनों को बढ़ाना ही सत्य की उपयोगिता है।

वेद कहता है कि जब हमारा जीवन सत्य व संयम पर आचरण करते हुए कार्य करेगा तो हमें सब ओर से सुख व शान्ति मिलेगी। यह तथ्य ऋग्वेद के मन्त्र 7-35-2 में स्पष्ट किया गया है। मूल मन्त्र इस प्रकार है:-

शं नो भग: शमु न: शंसो अस्तु, शं न: पुरन्धि: शमु सन्तु राय:।
शं न: सत्यस्य सुयमस्य शंस:, शं नो अर्यमा पुरूजातो अस्तु॥

ऋग 7.35.2।।

इस मन्त्र में प्रभु से हमारे लिए कल्याण की कामना करते हुए कहा है कि हे प्रभु। ऐश्वर्य का देवता भी हमारे लिए कल्याणकारी हो कीर्ति अथवा यश, धन या ऐश्वर्य तथा समृद्धि भी हमें सुख देने वाली हो। सत्य व संयम की प्रशंसा भी हमें सुख व कल्याणकारी हो। उदारता जिसे हम न्याय का अंग मानते हुए देव अर्यमा के नाम से जानते हैं, वह भी हमें सुख देने वाला हो।

भाव यह है कि प्रत्येक मनुष्य सुख व शान्ति का अभिलाषी होता है। अत: वह सदा वही साधन अपनाता है जिससे उसे सुख व शान्ति मिले। ऐसे साधनों में एक है सत्य, इससे जीवन में स्थिरता का प्रकाश होता है। इससे मानव में उदारता जागृत होती है। उदारता जागृत होने से सद्भावना की वृद्धि होती है। अब संयम अपनाने से जितेन्द्रियता आती है, जो शक्तियों को संयमित कर तेजस्विता पैदा करती है। इससे हम उन्नति व विकास के मार्ग पर अग्रसर होते हैं, जीवन का नवनिर्माण होता है।

इस प्रकार वेद के मन्त्रों में बताया गया है कि सत्य पर आधारित संयम से सुख, शान्ति व सब प्रकार की समृद्धियां मिलती हैं क्योंकि सत्य सब संसार का आधार है। सत्य पर चलने से हम संयमी बनते हैं तथा सब प्रकार के दु:खों से छूट जाते हैं, सत्य से हमें प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है। सत्यशील के देवता भी सहयोगी बन जाते हैं तथा यही भाव सागर से पार उतरने का उत्तम साधन है। जिस सत्य के इतने लाभ, इतने गुण हैं, उसे अपनाने में हमें सदा खुश होना चाहिए, सत्यव्रती बनना चाहिए, सफलता निश्चय ही मिलेगी।

- जी 7, शिप्रा अपार्मेन्ट, कोशाम्बी, गाजियाबाद, उ.प्र.

(पृष्ठ 1 का शेष)

पूर्वजन्मों के ज्ञान व कर्मों का परिणाम है। इसी प्रकार से हमारा परजन्म भी इस जन्म के शुभ व अशुभ कर्मों का परिणाम होगा। इस जन्म में वेदाध्ययन एवं सद्कर्मों को करने से मनुष्य इस जन्म सहित परजन्मों में भी सुख प्राप्त करता है तथा अशुभ कर्म न करने से इससे मिलने वाले दुःखों से वह बचा रहता है। अतः हमें वेदाध्ययन को प्रमुखता देनी चाहिये और प्रतिदिन यथासम्भव कुछ समय वेदों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये। वेदों से अपरिचित मनुष्य भौतिक सुखों की प्राप्ति को ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य मान लेता है और रात दिन धनोपार्जन व सम्पत्ति को अर्जित करने में लगा देता है। इससे उसे शारीरिक कुछ सुख मिलता है परन्तु यह सुख धर्म व शुभ कर्मों की तुलना में प्राप्त सुखों से निम्न कोटि का होता है। वेदानुकूल ईश्वरोपासना, यज्ञ, परोपकार के कार्य तथा दान आदि कर्म कर्तव्य की भावना से किये जाते हैं जिससे मनुष्य इन कर्मों में लिप्त नहीं होता। इन वेद विहित कर्मों का परिणाम सुख ही होता है जबकि वेदज्ञान से रहित कर्म करने से मनुष्य अनायास व अनजाने में भी अनेक अशुभ कर्म कर डालता है जिसका परिणाम उसे दुःख के रूप में भोगना पड़ता है। अतः स्वाध्याय से वेदज्ञान को प्राप्त कर मनुष्यों को वेदानुकूल शुभकर्मों को करते हुए धन व सम्पत्ति का संचय करना चाहिये व उसका त्यागपूर्वक भोग करने के साथ उससे अन्य बन्धुओं को भी लाभ पहुंचाना चाहिये। इसके लिये परोपकार एवं दान आदि कर्तव्य सुख, उन्नति व यश प्राप्त कराते हैं। अतः जीवन को अल्प व सीमित मात्र में भौतिक सुखों की इच्छा के साथ वेदाध्ययन तथा वेद निर्दिष्ट कर्तव्यों को भी अपनी जीवन शैली व दिनचर्या में सम्मिलित करना चाहिये। ऐसा जीवन ही संतुलित जीवन होता है जिसका परिणाम श्रेयस्कर होता है।

मनुष्य वेद एवं वैदिक साहित्य का अध्ययन करता है तो उसे इस सृष्टि के स्वामी व संचालक ईश्वर सहित जीवात्मा व सृष्टि का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। यह सृष्टि उसे अपने साध्य ईश्वर को प्राप्त करने में एक साधन के रूप में स्पष्ट प्रतीत होती है। सृष्टि मात्र सुख भोग के लिये नहीं अपितु त्यागपूर्वक जीवन का निर्वाह करते हुए आत्मा में शुभ गुण, कर्म व स्वभाव को धारण कर परमात्मा को प्राप्त करने वा उसका साक्षात्कार करने के लिये साधन रूप में हमें प्राप्त कराई गई है। हमारा शरीर भी मात्र सुखों का भोग करने के लिये नहीं बना है अपितु यह भी हमारी आत्मा को ईश्वर तक पहुंचाने वाला एक रथ है जो ईश्वर प्राप्ति का साधन है। हमें साध्य को प्राप्त करने में सहायक अपने शरीर को ज्ञान व तप से स्वस्थ व बल से युक्त रखना होता है। यही शरीर का सदुपयोग होता है। अपने उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति को भुलाकर मात्र धनोपार्जन करना, सम्पत्ति का संचय करना तथा इन्द्रियों के सुख भोगने को जीवन का उद्देश्य मान लेना अविद्या व भ्रम से युक्त सोच व विचारधारा है। हमें इससे बचना है और वेद और सत्यार्थप्रकाश से ही प्रेरणा लेकर अपने जीवन की सर्वांगीण उन्नति के लिये ईश्वर व आत्मा को स्मरण रखते हुए साधना करनी है। ईश्वर व आत्मा के यथार्थ ज्ञान को प्राप्त होकर हमें ईश्वर की उपासना एवं शुभकर्मों को करते हुए न्यून मात्रा में ही सुखों का भोग करना हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिये। इसके लिये हमें वेद आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करते हुए सद्ज्ञान से युक्त रहना चाहिये। यह मनुष्य जीवन की उन्नति के लिए आवश्यक एवं अनिवार्य है। मनुष्य वा उसकी आत्मा अल्पज्ञ सत्ता है। वह बिना वैदिक साहित्य व आप्त ऋषि-मुनियों के ग्रन्थों के सभी विषयों का सत्य व यथार्थ ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकती। इसके लिए उसे वेद, ऋषियों-मुनियों के ग्रन्थों सहित सद्गुरुओं की आवश्यकता होती है। वेद व उसके सत्यार्थ ही वस्तुतः हमारे सद्गुरु हैं। वेदाध्ययन से ही हम इस संसार को इसके यथार्थस्वरूप में जानने में समर्थ होते हैं। वेदों से हमें ज्ञात होता है कि ईश्वर व जीवात्मा सहित सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति अनादि व नित्य है। हम इस संसार में अनादिकाल से हैं और अनन्त काल तक रहेंगे। हमारा कभी नाश व अभाव नहीं होगा। अतीत में भी हम जन्म-मरण में फंसे रहे हैं तथा भविष्य में भी जन्म व मरण में आबद्ध रहेंगे। हमारा जन्म हमारे कर्मों के आधार पर होता है। अतः हमें कर्मों पर ध्यान देना होगा। इसके लिये ही वेदज्ञान सहायक होकर हमारा मार्गदर्शन करता है। हमें वेद वा वेदज्ञान को कभी नहीं छोड़ना है। यदि हम स्वाध्याय करते रहेंगे तो हमें अपने कर्तव्यों व उसके होने वाले परिणामों का ज्ञान रहेगा जिससे हम अशुभ कर्मों से होने वाले दुःखों व बार-बार के जन्म व मरण पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। वेदों से हमें अपने जीवन की उन्नति के यथार्थ व शाश्वत उपायों ईश्वरोपासना, यज्ञीय जीवन, अग्निहोत्र का करना तथा इतर सभी कर्तव्यों का ज्ञान भी होता है। अतः वेद को जीवन में कभी विस्मृत नहीं करना चाहिये।

वैदिक जीवन ही मनुष्य को आध्यात्मिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति कराता है। इसका उदाहरण हमारे सभी पूर्वज ऋषि, मुनि, योगी, राम, कृष्ण, दयानन्द आदि महापुरुष तथा सभी शीर्ष वैदिक विद्वान रहे हैं। अतः हमें अपने पूर्वजों व महापुरुषों का अनुकरण व अनुसरण करना चाहिये। ऐसा करने से हमारा जीवन निश्चय ही उन्नत एवं सफल होगा। अतः हमें प्रतिदिन प्रातः व सायं ईश्वर का ध्यान व स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हुए अपनी आत्मा की उन्नति तथा जीवन की सफलता पर विचार अवश्य करना चाहिये। ऐसा करने से परमात्मा से हमें सीधा मार्गदर्शन प्राप्त होगा और हम स्वाध्याय व सदाचरण करते हुए दुःखों से बचेंगे और धर्म के संचय से उत्तम गति मोक्ष को प्राप्त कर जीवन को सफल कर सकेंगे।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोनः 09412985121

स्वाध्यायमां प्रमाद शा माटे?

ચોથા સમ્મુલ્લાસમાં પણ અનેક વિષયોનું વર્ણન છે. સમાવર્તન, દૂરના દેશમાં વિવાહ કરવા, વિવાહ માટે સ્ત્રીપુરુષ પરીક્ષા, બાળવિવાહનો નિષેધ, ગુણકર્માનુસારેણ વર્ણ વ્યવસ્થા, વિવાહના લક્ષણ, સ્ત્રી-પુરુષ વ્યવહાર, પંચમહા યજ્ઞ, પાખંડનો તિરસ્કાર, પ્રાતઃજાગરણ, પાખંડિઓના લક્ષણ, ગૃહસ્થ ધર્મ, પંડિતના લક્ષણ, મૂર્ખના લક્ષણ, પુનર્વિવાહ માટે વિચાર, નિયોગ વિષય ગૃહસ્થાશ્રમની શ્રેષ્ઠતાદિ. પાંચમાં સમ્મુલ્લાસમાં વાનપ્રસ્થ અને સંન્યાસાશ્રમની વિધિની વીત કરી છે. છઠઠા સમ્મુલ્લાસમાં મુખ્યરીતે રાજધર્મ, રાજાના લક્ષણ, દંડ વ્યવસ્થા, રાજાના કર્તવ્ય, અઢાર વ્યનોનો નિષેધ, મન્ત્રિઓના કાર્ય, રાજ્યની રક્ષા, કર ગ્રહણ, રાજાના મિત્ર, ઉદાસીન અને શત્રોનો વિષય, શત્રુઓ સાથે યુદ્ધ કરવાના પ્રકાર તથા વ્યાપારાદિ વિષયોનું વર્ણન છે. સાતમો સમ્મુલ્લાસ મહત્વપૂર્ણ સમ્મુલ્લાસ છે. આસમ્મુલ્લાસમાં ઈશ્વર, ઈશ્વરની સ્તુતિ પ્રાર્થના ઉપાસના, ઈશ્વરના જ્ઞાનના પ્રકાર, ઈશ્વરનું અસ્તિત્વ, ઈશ્વરના અવતાર હોવાનું ખંડન, જીવની સ્વતંત્રતા, જીવ અને ઈશ્વરની ભિન્નતાનું વર્ણન, ઈશ્વરની સગુણ અને નિર્ગપાણ ભક્તિનું વર્ણન તથા વેદના વિષયો ઉપર વિચાર કરવામાં આવ્યો છે. વેદોની નિર્ણાયક અને નિશ્ચયાત્મક માન્યતાઓ તેમજ સિદ્ધાંતોનું વર્ણન છે. સત્યાર્થપ્રકાશના આઠમા સમ્મુલ્લાસમાં સૃષ્ટિ ઉત્પત્તિ, ઈશ્વરથી ભિન્ન સૃષ્ટિના ઉત્પાદનના કારણ પ્રકૃતિનું વર્ણન, સૃષ્ટિની આદિમાં મનુષ્યોની ઉત્પત્તિના સ્થાનનો નિર્ણય આર્ય તેમજ ઈશ્વરનું ઉપાદાન કારણ પ્રકૃતિનું વર્ણન, સૃષ્ટિની આદિમાં મનુષ્યોના ઉત્પત્તિ સ્થાનનો નિર્ણય, આર્ય તેમજ બીજી મનુષ્ય જાતિના ઉલ્લેખ સહિત ઈશ્વર દ્વારા જગતને ધારણ કરવાનો વિષય વિસ્તારથી પ્રભાવશાળી અને સ્પષ્ટ રીતે વર્ણન છે. દસમા સમ્મુલ્લાસમાં આચાર-અનાચાર સહિત ભક્ષ્ય – અભક્ષ્ય પદાર્થોનુંવર્ણન છે.

Life is very complicated
don`t try to find answers.
Because
when you find answers,
life changes the questions.

टंकारा समाचार जून 2023

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2021-22-23

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2023

Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-06-2023

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.05.2023

नई तकनीक के साथ, पाएं स्वाद ही स्वाद

TASTE POINT

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक–**अजय सहगल** द्वारा **मयंक प्रिंटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। **संपादक : अजय**